

संश्लेषकर्ता का परिचय

一、在政治生活中，要正确地认识和处理人民内部矛盾，要实行“团结—批评—团结”的方针，即从团结的愿望出发，经过批评或者斗争，使矛盾得到解决，从而在新的基础上达到新的团结。

1. 凡在本行開辦之各項業務，均應遵守本行所定之規章制度，並應隨時注意業務之改進，以期提高服務品質。

[illegible][illegible][illegible]

परभावना

इस कथन का नाम भवति परावृत्ति (योग साधन की विधि) है क्योंकि इसका परवर्तन 'द्रव्यानुयोग बोधितम्' है । इसमें द्रव्य, कर्म, कर्माण, परवर्त, प्रमाण और नय पारि का कथन है । द्रव्यानुयोग की व्याख्या में पूर्ण व्याख्यानपद्धति का ज्ञान होना परवर्तन आवश्यक है, क्योंकि इसमें हीना द्रव्यानुयोग में प्रवेश तथा उसका परवर्तन योग, नहीं हो सकता है ।

मूल नय यह है—निश्चयनय और अपवृत्तनय, जैसा कि इसी कथन में गाथा ४ में कहा है—

‘णिच्छयव्यवहारण्या मूलमभेदा गगणा मन्त्राणां ।’

भेद प्रतिभेदों की अपेक्षा न रखकर द्रव्यानुयोग में प्रायः निश्चय व व्यवहार ऐसे दो नयों का उत्तेज पाया जाता है । उपचरित-प्रसद्भूत व्यवहार नय की दृष्टि में एक जीव दूसरे जीव को मारता है, मुसी दुसी करता है किन्तु अनुपचरित-प्रसद्भूत-व्यवहारनय की दृष्टि में अपने कर्म ही जीव को मुसी-दुसी करते हैं या मारते हैं । गमयसार कलश १६८ में कहा भी है—

‘सर्वं सदैव नियतं भवति स्वकीयकर्मोदयान्मरणजीवितदुःखमौख्यम् ।’

अर्थात् इस जगत में जीवों के मरण, जीवन, दुःख, सुख, मय नदैव नियम से (निश्चय से) अपने कर्मोदय से होता है । यह कथन यद्यपि अनुपचरित-प्रसद्भूत-व्यवहारनय की दृष्टि से है तथापि उपचरित-प्रसद्भूत-व्यवहारनय की अपेक्षा से इसको निश्चय कहा गया है ।

प्रसद्भूत व्यवहारनय की अपेक्षा से सदभूत व्यवहारनय को निश्चय कहा गया है—

व्यवहारस्स दु आदा पुगलकम्मं करेइ रोयविहं ।

तं चेव पुणो वेयह पुगलकम्मं अरोयविहं ॥८४॥

णिच्छयण्यस्स एवं आदा अप्पाणमेव हि करेदि ।

वेदयदि पुणो तं चेव जाणं अत्ता दु अत्ताणं ॥८३॥ [समय०]

[illegible][illegible]

一、本行在各地設有分行及代理店，凡有存款、放款、匯兌、買賣有價證券等業務，均極妥速辦理。本行資本總額為一百萬元，實收資本為五十萬元，公積金為二十五萬元，總行設在上海，分行遍設於各埠。

[illegible]

我之爲人，自問亦非庸碌，然於此一事，則深感其難。蓋此一事，關係於我之生命，而亦關係於我之名譽。我之生命，我固不敢不顧，然我之名譽，我亦不敢不顧。我之生命，我固不敢不顧，然我之名譽，我亦不敢不顧。我之生命，我固不敢不顧，然我之名譽，我亦不敢不顧。

[illegible][illegible]

[Handwritten notes in cursive script]

20) 2017 2018-19, 2019-20, 2020-21 2021-22 2022-23 2023-24 2024-25 2025-26 2026-27 2027-28 2028-29 2029-30 2030-31 2031-32 2032-33 2033-34 2034-35 2035-36 2036-37 2037-38 2038-39 2039-40 2040-41 2041-42 2042-43 2043-44 2044-45 2045-46 2046-47 2047-48 2048-49 2049-50 2050-51 2051-52 2052-53 2053-54 2054-55 2055-56 2056-57 2057-58 2058-59 2059-60 2060-61 2061-62 2062-63 2063-64 2064-65 2065-66 2066-67 2067-68 2068-69 2069-70 2070-71 2071-72 2072-73 2073-74 2074-75 2075-76 2076-77 2077-78 2078-79 2079-80 2080-81 2081-82 2082-83 2083-84 2084-85 2085-86 2086-87 2087-88 2088-89 2089-90 2090-91 2091-92 2092-93 2093-94 2094-95 2095-96 2096-97 2097-98 2098-99 2099-100 2100-101 2101-102 2102-103 2103-104 2104-105 2105-106 2106-107 2107-108 2108-109 2109-110 2110-111 2111-112 2112-113 2113-114 2114-115 2115-116 2116-117 2117-118 2118-119 2119-120 2120-121 2121-122 2122-123 2123-124 2124-125 2125-126 2126-127 2127-128 2128-129 2129-130 2130-131 2131-132 2132-133 2133-134 2134-135 2135-136 2136-137 2137-138 2138-139 2139-140 2140-141 2141-142 2142-143 2143-144 2144-145 2145-146 2146-147 2147-148 2148-149 2149-150 2150-151 2151-152 2152-153 2153-154 2154-155 2155-156 2156-157 2157-158 2158-159 2159-160 2160-161 2161-162 2162-163 2163-164 2164-165 2165-166 2166-167 2167-168 2168-169 2169-170 2170-171 2171-172 2172-173 2173-174 2174-175 2175-176 2176-177 2177-178 2178-179 2179-180 2180-181 2181-182 2182-183 2183-184 2184-185 2185-186 2186-187 2187-188 2188-189 2189-190 2190-191 2191-192 2192-193 2193-194 2194-195 2195-196 2196-197 2197-198 2198-199 2199-200 2200-201 2201-202 2202-203 2203-204 2204-205 2205-206 2206-207 2207-208 2208-209 2209-210 2210-211 2211-212 2212-213 2213-214 2214-215 2215-216 2216-217 2217-218 2218-219 2219-220 2220-221 2221-222 2222-223 2223-224 2224-225 2225-226 2226-227 2227-228 2228-229 2229-230 2230-231 2231-232 2232-233 2233-234 2234-235 2235-236 2236-237 2237-238 2238-239 2239-240 2240-241 2241-242 2242-243 2243-244 2244-245 2245-246 2246-247 2247-248 2248-249 2249-250 2250-251 2251-252 2252-253 2253-254 2254-255 2255-256 2256-257 2257-258 2258-259 2259-260 2260-261 2261-262 2262-263 2263-264 2264-265 2265-266 2266-267 2267-268 2268-269 2269-270 2270-271 2271-272 2272-273 2273-274 2274-275 2275-276 2276-277 2277-278 2278-279 2279-280 2280-281 2281-282 2282-283 2283-284 2284-285 2285-286 2286-287 2287-288 2288-289 2289-290 2290-291 2291-292 2292-293 2293-294 2294-295 2295-296 2296-297 2297-298 2298-299 2299-300 2300-301 2301-302 2302-303 2303-304 2304-305 2305-306 2306-307 2307-308 2308-309 2309-310 2310-311 2311-312 2312-313 2313-314 2314-315 2315-316 2316-317 2317-318 2318-319 2319-320 2320-321 2321-322 2322-323 2323-324 2324-325 2325-326 2326-327 2327-328 2328-329 2329-330 2330-331 2331-332 2332-333 2333-334 2334-335 2335-336 2336-337 2337-338 2338-339 2339-340 2340-341 2341-342 2342-343 2343-344 2344-345 2345-346 2346-347 2347-348 2348-349 2349-350 2350-351 2351-352 2352-353 2353-354 2354-355 2355-356 2356-357 2357-358 2358-359 2359-360 2360-361 2361-362 2362-363 2363-364 2364-365 2365-366 2366-367 2367-368 2368-369 2369-370 2370-371 2371-372 2372-373 2373-374 2374-375 2375-376 2376-377 2377-378 2378-379 2379-380 2380-381 2381-382 2382-383 2383-384 2384-385 2385-386 2386-387 2387-388 2388-389 2389-390 2390-391 2391-392 2392-393 2393-394 2394-395 2395-396 2396-397 2397-398 2398-399 2399-400 2400-401 2401-402 2402-403 2403-404 2404-405 2405-406 2406-407 2407-408 2408-409 2409-410 2410-411 2411-412 2412-413 2413-414 2414-415 2415-416 2416-417 2417-418 2418-419 2419-420 2420-421 2421-422 2422-423 2423-424 2424-425 2425-426 2426-427 2427-428 2428-429 2429-430 2430-431 2431-432 2432-433 2433-434 2434-435 2435-436 2436-437 2437-438 2438-439 2439-440 2440-441 2441-442 2442-443 2443-444 2444-445 2445-446 2446-447 2447-448 2448-449 2449-450 2450-451 2451-452 2452-453 2453-454 2454-455 2455-456 2456-457 2457-458 2458-459 2459-460 2460-461 2461-462 2462-463 2463-464 2464-465 2465-466 2466-467 2467-468 2468-469 2469-470 2470-471 2471-472 2472-473 2473-474 2474-475 2475-476 2476-477 2477-478 2478-479 2479-480 2480-481 2481-482 2482-483 2483-484 2484-485 2485-486 2486-487 2487-488 2488-489 2489-490 2490-491 2491-492 2492-493 2493-494 2494-495 2495-496 2496-497 2497-498 2498-499 2499-500 2500-501 2501-502 2502-503 2503-504 2504-505 2505-506 2506-507 2507-508 2508-509 2509-510 2510-511 2511-512 2512-513 2513-514 2514-515 2515-516 2516-517 2517-518 2518-519 2519-520 2520-521 2521-522 2522-523 2523-524 2524-525 2525-526 2526-527 2527-528 2528-529 2529-530 2530-531 2531-532 2532-533 2533-534 2534-535 2535-536 2536-537 2537-538 2538-539 2539-540 2540-541 2541-542 2542-543 2543-544 2544-545 2545-546 2546-547 2547-548 2548-549 2549-550 2550-551 2551-552 2552-553 2553-554 2554-555 2555-556 2556-557 2557-558 2558-559 2559-560 2560-561 2561-562 2562-563 2563-564 2564-565 2565-566 2566-567 2567-568 2568-569 2569-570 2570-571 2571-572 2572-573 2573-574 2574-575 2575-576 2576-577 2577-578 2578-579 2579-580 2580-581 2581-582 2582-583 2583-584 2584-585 2585-586 2586-587 2587-588 2588-589 2589-590 2590-591 2591-592 2592-593 2593-594 2594-595 2595-596 2596-597 2597-598 2598-599 2599-600 2600-601 2601-602 2602-603 2603-604 2604-605 2605-606 2606-607 2607-608 2608-609 2609-610 2610-611 2611-612 2612-613 2613-614 2614-615 2615-616 2616-617 2617-618 2618-619 2619-620 2620-621 2621-622 2622-623 2623-624 2624-625 2625-626 2626-627 2627-628 2628-629 2629-630 2630-631 2631-632 2632-633 2633-634 2634-635 2635-636 2636-637 2637-638 2638-639 2639-640 2640-641 2641-642 2642-643 2643-644 2644-645 2645-646 2646-647 2647-648 2648-649 2649-650 2650-651 2651-652 2652-653 2653-654 2654-655 2655-656 2656-657 2657-658 2658-659 2659-660 2660-661 2661-662 2662-663 2663-664 2664-665 2665-666 2666-667 2667-668 2668-669 2669-670 2670-671 2671-672 2672-673 2673-674 2674-675 2675-676 2676-677 2677-678 2678-679 2679-680 2680-681 2681-682 2682-683 2683-684 2684-685 2685-686 2686-687 2687-688 2688-689 2689-690 2690-691 2691-692 2692-693 2693-694 2694-695 2695-696 2696-697 2697-698 2698-699 2699-700 2700-701 2701-702 2702-703 2703-704 2704-705 2705-706 2706-707 2707-708 2708-709 2709-710 2710-711 2711-712 2712-713 2713-714 2714-715 2715-716 2716-717 2717-718 2718-719 2719-720 2720-721 2721-722 2722-723 2723-724 2724-725 2725-726 2726-727 2727-728 2728-729 2729-730 2730-731 2731-732 2732-733 2733-734 2734-735 2735-736 2736-737 2737-738 2738-739 2739-740 2740-741 2741-742 2742-743 2743-744 2744-745 2745-746 2746-747 2747-748 2748-749 2749-750 2750-751 2751-752 2752-753 2753-754 2754-755 2755-756 2756-757 2757-758 2758-759 2759-760 2760-761 2761-762 2762-763 2763-764 2764-765 2765-766 2766-767 2767-768 2768-769 2769-770 2770-771 2771-772 2772-773 2773-774 2774-775 2775-776 2776-777 2777-778 2778-779 2779-780 2780-781 2781-782 2782-783 2783-784 2784-785 2785-786 2786-787 2787-788 2788-789 2789-790 2790-791 2791-792 2792-793 2793-794 2794-795 2795-796 2796-797 2797-798 2798-799 2799-800 2800-801 2801-802 2802-803 2803-804 2804-805 2805-806 2806-807 2807-808 2808-809 2809-810 2810-811 2811-812 2812-813 2813-814 2814-815 2815-816 2816-817 2817-818 2818-819 2819-820 2820-821 2821-822 2822-823 2823-824 2824-825 2825-826 2826-827 2827-828 2828-829 2829-830 2830-831 2831-832 2832-833 2833-834 2834-835 2835-836 2836-837 2837-838 2838-839 2839-840 2840-841 2841-842 2842-843 2843-844 2844-845 2845-846 2846-847 2847-848 2848-849 2849-850 2850-851 2851-852 2852-853 2853-854 2854-855 2855-856 2856-857 2857-858 2858-859 2859-860 2860-861 2861-862 2862-863 2863-864 2864-865 2865-866 2866-867 2867-868 2868-869 2869-870 2870-871 2871-872 2872-873 2873-874 2874-875 2875-876 2876-877 2877-878 2878-879 2879-880 2880-881 2881-882 2882-883 2883-884 2884-885 2885-886 2886-887 2887-888 2888-889 2889-890 2890-891 2891-892 2892-893 2893-894 2894-895 2895-896 2896-897 2897-898 2898-899 2899-900 2900-901 2901-902 2902-903 2903-904 2904-905 2905-906 2906-907 2907-908 2908-909 2909-910 2910-911 2911-912 2912-913 2913-914 2914-915 2915-916 2916-917 2917-918 2918-919 2919-920 2920-921 2921-922 2922-923 2923-924 2924-925 2925-926 2926-927 2927-928 2928-929 2929-930 2930-931 2931-932 2932-933 2933-934 2934-935 2935-936 2936-937 2937-938 2938-939 2939-940 2940-941 2941-942 2942-943 2943-944 2944-945 2945-946 2946-947 2947-948 2948-949 2949-950 2950-951 2951-952 2952-953 2953-954 2954-955 2955-956 2956-957 2957-958 2958-959 2959-960 2960-961 2961-962 2962-963 2963-964 2964-965 2965-966 2966-967 2967-968 2968-969 2969-970 2970-971 2971-972 2972-973 2973-974 2974-975 2975-976 2976-977 2977-978 2978-979 2979-980 2980-981 2981-982 2982-983 2983-984 2984-985 2985-986 2986-987 2987-988 2988-989 2989-990 2990-991 2991-992 2992-993 2993-994 2994-995 2995-996 2996-997 2997-998 2998-999 2999-1000 3000-1001 3001-1002 3002-1003 3003-1004 3004-1005 3005-1006 3006-1007 3007-1008 3008-1009 3009-1010 3010-1011 3011-1012 3012-1013 3013-1014 3014-1015 3015-1016 3016-1017 3017-1018 3018-1019 3019-1020 3020-1021 3021-1022 3022-1023 3023-1024 3024-1025 3025-1026 3026-1027 3027-1028 3028-1029 3029-1030 3030-1031 3031-1032 3032-1033 3033-1034 3034-1035 3035-1036 3036-1037 3037-1038 3038-1039 3039-1040 3040-1041 3041-1042 3042-1043 3043-1044 3044-1045 3045-1046 3046-1047 3047-1048 3048-1049 3049-1050 3050-1051 3051-1052 3052-1053 3053-1054 3054-1055 3055-1056 3056-1057 3057-1058 3058-1059 3059-1060 3060-1061 3061-1062 3062-1063 3063-1064 3064-1065 3065-1066 3066-1067 3067-1068 3068-1069 3069-1070 3070-1071 3071-1072 3072-1073 3073-1074 3074-1075 3075-1076 3076-1077 3077-1078 3078-1079 3079-1080 3080-1081 3081-1082 3082-1083 3083-1084 3084-1085 3085-1086 3086-1087 3087-1088 3088-1089 3089-1090 3090-1091 3091-1092 3092-1093 3093-1094 3094-1095 3095-1096 3096-1097 3097-1098 3098-1099 3099-1100 3100-1101 3101-1102 3102-1103 3103-1104 3104-1105 3105-1106 3106-1107 3107-1108 3108-1109 3109-1110 3110-1111 3111-1112 3112-1113 3113-1114 3114-1115 3115-1116 3116-1117 3117-1118 3118-1119 3119-1120 3120-1121 3121-1122 3122-1123 3123-1124 3124-1125 3125-1126 3126-1127 3127-1128 3128-1129 3129-1130 3130-1131 3131-1132 3132-1133 3133-1134 3134-1135 3135-1136 3136-1137 3137-1138 3138-1139 3139-1140 3140-1141 3141-1142 3142-1143 3143-1144 3144-1145 3145-1146 3146-1147 3147-1148 3148-1149 3149-1150 3150-1151 3151-1152 3152-1153 3153-1154 3154-1155 3155-1156 3156-1157 3157-1158 3158-1159 3159-1160 3160-1161 3161-1162 3162-1163 3163-1164 3164-1165 3165-1166 3166-1167 3167-1168 3168-1169 3169-1170 3170-1171 3171-1172 3172-1173 3173-1174 3174-1175 3175-1176 3176-1177 3177-1178 3178-1179 3179-1180 3180-1181 3181-1182 3182-1183 3183-1184 3184-1185 3185-1186 3186-1187 3187-1188 3188-1189 3189-1190 3190-1191 3191-1192 3192-1193 3193-1194 3194-1195 3195-1196 3196-1197 3197-1198 3198-1199 3199-1200 3200-1201 3201-1202 3202-1203 3203-1204 3204-1205 3205-1206 3206-1207 3207-1208 3208-1209 3209-1210 3210-1211 3211-1212 3212-1213 3213-1214 3214-1215 3215-1216 3216-1217 3217-1218 3218-1219 3219-1220 3220-1221 3221-1222 3222-1223 3223-1224 3224-1225 3225-1226 3226-1227 3227-1228 3228-1229 3229-1230 3230-1231 3231-1232 3232-1233 3233-1234 3234-1235 3235-1236 3236-1237 3237-1238 3238-1239 3239-1240 3240-1241 3241-1242 3242-1243 3243-1244 3244-1245 3245-1246 3246-1247 3247-1248 3248-1249 3249-1250 3250-1251 3251-1252 3252-1253 3253-1254 3254-1255 3255-1256 3256-1257 3257-1258 3258-1259 3259-1260 3260-1261 3261-1262 3262-1263 3263-1264 3264-1265 3265-1266 3266-1267 3267-1268 3268-1269 3269-1270 3270-1271 3271-1272 3272-1273 3273-1274 3274-1275 3275-1276 3276-1277 3277-1278 3278-1279 3279-1280 3280-1281 3281-1282 3282-1283 3283-1284 3284-1285 3285-1286 3286-1287 3287-1288 3288-1289 3289-1290 3290-1291 3291-1292 3292-1293 3293-1294 3294-1295 3295-1296 3296-1297 3297-1298 3298-1299 3299-1300 3300-1301 3301-1302 3302-1303 3303-1304 3304-1305 3305-1306 3306-1307 3307-1308 3308-1309 3309-1310 3310-1311 3311-1312 3312-1313 3313-1314 3314-1315 3315-1316 3316-1317 3317-1318 3318-1319 3319-1320 3320-1321 3321-1322 3322-1323 3323-1324 3324-1325 3325-1326 3326-1327 3327-1328 3328-1329 3329-1330 3330-1331 3331-1332 3332-1333 3333-1334 3334-1335 3335-1336 3336-1337 3337-1338 3338-1339 3339-1340 3340-1341 3341-1342 3342-1343 3343-1344 3344-1345 3345-1346 3346-1347 3347-1348 3348-1349 3349-1350 3350-1351 3351-1352 3352-1353 3353-1354 3354-1355 33

जयश्रीका सभी महाप्रभावी श्री गंगासा न सहयोग न प्रति में प्रति
साधारण रूप से है ।

उम मन्द के अनुसार न हीका का कार्य गन्धि मन् १९५७ ई० में पूर्ण
हो चुका था किन्तु प्रेम की गंगासा न हो जाने के कारण उमका प्रकाशन न
हो सका । गन्धि मन् १९५९ ई० में भाद्रपद मास के दशमश्रावण पर्व में
मेरठ मन्दर रहना हुआ । तब श्री रतनलाल जैन एम. कॉम. (गुरुप सा०
महावीरप्रसाद जैन मोटर गाडी) ने मुद्रण का भार ले लिया । उनके साथ
प्रेम के सम्बन्ध नमैनास्थियों के सहयोग के फलस्वरूप उमका मुद्रण हो गया ।
मैं उक्त श्री रतनलाल आदि का भी बहुत आभारी हूँ ।

मैं मन्द बुद्धि हूँ, यदि कहीं पर अनुवाद आदि में कोई अनुद्धि रह गई
हो तो बिद्वान् उमको शुद्ध करने की धीर मुक्तकी क्षमा करने की कृपा करें ।

सहारनपुर

वीर निर्वाण दिवस संवत् २४६७

—रतनचन्द जैन, मुख्तार



विषय-सूची

पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या	पृष्ठ-संख्या
(भाग १)	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की विविधता	१	१३
	संस्कृत, विविधता, संस्कृत, संस्कृत, संस्कृत, संस्कृत, संस्कृत, संस्कृत		१६
१	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की	१	१७
२	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की	१	१८
३-४	संस्कृत की संस्कृत शब्दों की संस्कृत	३	१९-२०
	संस्कृत, संस्कृत की संस्कृत शब्दों की		२१

संस्कृत-संस्कृत

२-४ १९-२०

५	संस्कृत की संस्कृत		२३
६	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की संस्कृत	६	२४
७-८	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की संस्कृत	७	२५
	संस्कृत, संस्कृत, संस्कृत की संस्कृत की संस्कृत-संस्कृत शब्दों की		२६
९-१०	संस्कृत, संस्कृत, संस्कृत, संस्कृत-संस्कृत शब्दों की संस्कृत		२७
	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की		२८

संस्कृत-संस्कृत

२-४ १९-२०

११	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की संस्कृत	११	२९
१२	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की संस्कृत	१२	३०
१३	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की संस्कृत	१३	३१
१४	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की संस्कृत	१४	३२
१५	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की संस्कृत	१५	३३
१६	संस्कृत-संस्कृत शब्दों की संस्कृत	१६	३४

२३	पुद्गल व जीवों में स्वभाव का अन्तर्भाव	७	७
२४	पुद्गल व जीवों में स्वभाव का अन्तर्भाव	७	७
२५	पुद्गल व जीवों में स्वभाव का अन्तर्भाव	७	७
२६	पुद्गल व जीवों में स्वभाव का अन्तर्भाव	७	७
(गाथा १)	पदार्थ परिवर्तन स्वभाव होता प्रतीत होता है	७	७
	द्वयार्थक रूप से द्रव्य विभक्त है, पदार्थार्थक रूप से		
	द्रव्य अविभक्त है		
(गाथा २)	पदार्थ का स्वभाव ही स्वभाव ही होता है		
	किन्तु जीव, पुद्गल व अर्थका पदार्थ भी होता है	७	७
	विद्या-विनिर्वाह प्रसार व विविध द्रव्य में प्रसार	७	७

स्वभाव-अधिकार

७-६ ७२-७

२७	द्रव्य का अन्तर्भाव, गुण व पदार्थ का अन्तर्भाव;		
	द्रव्य के भीतों अन्तर्भावों में अन्तर नहीं है	७	७
२८	मागान्य व विशेष स्वभाव व उनका स्वभाव	७	७
	स्वभाव व गुण में अन्तर	७	७
२९	जीव व पुद्गल में २१ स्वभाव की गिद्धि	९	७
	जीव में अचेतनत्व व मूर्तत्व की गिद्धि तथा		
	पुद्गल में चेतनत्व व अमूर्तत्व की गिद्धि		७६-७
३०	घर्मादि द्रव्यों में १६ स्वभाव	९	७
३१	काल में १५ स्वभाव	९	८
(गाथा ३)	जीव आदि द्रव्यों में स्वभावों का कथन	९	८

प्रमाण-अधिकार

१० ८१-८

३२	प्रमाण व तथ से २१ स्वभाव जाने जाते हैं	१०	८
----	--	----	---

४८	उत्पाद-व्यय को गौण करके मत्ता को ग्रहण करने वाला शुद्ध-द्रव्याधिक नय	११	१०५
४९	भेदकल्पनानिरपेक्ष शुद्ध-द्रव्याधिक नय	१२	१०६
५०	कर्मोपाधिसापेक्ष अशुद्ध-द्रव्याधिक नय	१२	१०७
५१	उत्पादव्ययसापेक्ष अशुद्ध-द्रव्याधिक नय	१२	१०७
५२	भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्ध-द्रव्याधिक नय	१२	१०८
५३	अन्वयसापेक्ष द्रव्याधिक नय	१२	१०९
५४	स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्याधिक नय	१२	१०९
५५	परद्रव्यादिग्राहक द्रव्याधिक नय	१२	११०
५६	परमभावग्राहक द्रव्याधिक नय	१२	१११
५८	अनादि-नित्य पर्यायाधिक नय	१३	११२
५९	सादिनित्य पर्यायाधिक नय	१३	११३
	क्षायिकभाव सादि-नित्य है		११४
६०	अनित्य-शुद्ध पर्यायाधिक नय	१३	११५
६१	नित्य-अशुद्ध पर्यायाधिक नय	१३	११५
६२	नित्य-शुद्ध पर्यायाधिक नय	१३	११६
६३	अनित्य-अशुद्ध पर्यायाधिक नय	१३	११७
६४-६७	भूत-भावि-वर्तमान नैगम नय	१३-१४	११८-१२२
६८-७०	सामान्य-विशेष संग्रह नय	१४	१२२-१२३
७१-७२	दो प्रकार व्यवहार नय	१५	१२४
७३-७५	दो प्रकार ऋजुमूत्र नय	१५	१२६
७६-७९	शब्द, सममिच्छा, एवंभूत नय	१५	१२८-१३०
८२	शुद्ध-सद्भूत-व्यवहार नय	१६	१३१
८३	अशुद्ध-सद्भूत-व्यवहार नय	१६	१३१
८५	स्वजात्यसद्भूत-व्यवहार नय	१६	१३३
८६	विजात्यसद्भूत-व्यवहार नय	१६	१३३
८७	स्वजातिविजात्यसद्भूत-व्यवहार नय	१६	१३४
८८	उपचरित-अगदभूत-व्यवहार नय	१६	१३५

दीपोत्सवदिने श्री वर्द्धमानस्वामी मोक्षं गतः ॥६५॥

टिप्पण—अतीते=अतीतकाले । आरोपणं=संस्थापनं ।

भाविनि भूतवत्कथनं यत्र स भाविनैगमो यथा अर्हन्

सिद्ध एव ॥६६॥

टिप्पण—भाविनि भविष्यति पदार्थे । भूतवत्=भूतेन तुल्यं ।
अर्हन्=इन्द्रादिकृतामनन्यसंभाविनीं गर्भावतरणं जन्माभिपेक्षं निष्कृष्टं
केवलज्ञानोत्पत्तिं निर्वाणाभिधानपंचमहाकल्याणरूपां अर्हणं पूजां
अर्हति योग्यो भवतीति अर्हन् । सिद्धः=सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः
संजाता अस्तेति सिद्धः, किञ्चिदूनचरमशरीराकारेण गतं सिवयक मूपा-
गर्भाकारवत् छायाप्रतिमावत् पुरुषाकारः सिद्धः । अंजनसिद्ध पादुका-
सिद्ध गुटिकासिद्ध खड्गसिद्ध मायासिद्धादि लौकिक विलक्षण
केवलज्ञानाद्यनंतगुणव्यक्तिलक्षणः सिद्धः । यः अर्हन् स सिद्ध एवेति
भविष्यति पदार्थे भूतवत्कथनं भाविनैगमः ।

कर्तुं मारब्धमीषन्निष्पन्नमनिष्पन्नं वा वस्तु निष्पन्नवत्
कथ्यते यत्र स वर्तमाननैगमो यथा ओदनः पच्यते ॥६७॥

॥ इति नैगमसूत्रेण ॥

संग्रहो द्वेधाः ॥६८॥

सामान्यसङ्ग्रहो यथा सर्वाणि द्रव्याणि परस्परम-
विरोधीनि ॥६९॥

विशेषसङ्ग्रहो यथा सर्वे जीवाः परस्परमविरोधिनाः ॥७०॥

॥ इति सङ्ग्रहो द्विधा ॥

१. केचित्पुण्ड्रा—अतीतवर्तमान, वर्तमानातीत, अनागतवर्तमाना, वर्तमाना-
नागता, अनागतातीत, अतीतानागत । देखो दिल्ली की प्रति नं० ३१/१०४ ।

१. 'दाराद्यहं मम वा' इति पाठांतरं [बुंदी की प्रति में] ।

अभिप्रेतः

~~XXXXXXXXXXXXXXXXXXXX~~ ~~XXXX~~ ~~XXXX~~ ~~XXXXXXXXXXXX~~

संज्ञा: ११२२२२

1950年10月1日 星期一

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

संज्ञा संज्ञा

CONFIDENTIAL - NO DISSEM

一、政治思想：……
 二、工作表现：……
 三、生活作风：……
 四、其他：……

附錄一 附錄二

中華民國二十九年九月九日
 中華民國二十九年九月九日

新傳的：外國電影院——電影學校

(Calligraphy by Xu Shizhi)

1954年10月1日

1. 1990年12月15日，在北京市召开的“中国城市经济体制改革十年回顾与展望”会议上，江泽民同志在讲话中提出，要“进一步转换国有企业经营机制，建立现代企业制度”。

[illegible][illegible][illegible]

姓名: 王德林 性别: 男 年龄: 45 民族: 汉族
 籍贯: 山东省潍坊市 职业: 教师
 学历: 本科 学位: 学士
 工作单位: 潍坊市第一中学
 联系电话: 0536-2345678
 电子邮箱: wangdelin@163.com

一、《说文解字》：中国第一部系统分析字形、考究字源的字书。

此後，我與陳永發、陳冠中小聚，談話中，陳冠中小聲地說：「我與陳永發，是『左派』的『左派』。」

[illegible]

द्रव्याभ्यां निर्गुणा गुणाः इति लक्षणभेदः । द्रव्येण लोकमानं क्रियते
 गुणेन द्रव्यं द्वायते, इति प्रयोजन भेदः । यथा जीवद्रव्यस्य जीवो
 इति संज्ञा । ज्ञानगुणस्य ज्ञानमिति संज्ञा । चतुर्भिप्राणैः जीवो
 जीवित्यति अजीवित्यति जीवद्रव्यलक्षणं । द्वायते पदार्थं अनेन
 ज्ञानमिति ज्ञानगुणलक्षणं । जीवद्रव्यस्य बंधमोक्षादिपर्यायेरवित्त-
 हरेणपरिणामनं प्रयोजनं । ज्ञानगुणस्य पुनः पदार्थपरिच्छिन्नमिति मानस-
 प्रयोजनं इति संक्षेपेण ।

गुणगुणानोक्तस्वभावादभेदस्वभावः ॥११३॥

भावितादि परस्वल्पाकारभवनान्द्रव्यस्वभावः ॥११४॥

भावनोर्भावि परस्वल्पाकारभवनान्द्रव्यस्वभावः ॥११५॥

॥११६॥

अणमण्यं पवित्रं दिवा उमासमण्यमण्यम् ।

मया विद्यमानं यममभावं ग विजर्तन ॥११७॥

अणमण्यं पवित्रं दिवा उमासमण्यमण्यम् ॥११८॥

अणमण्यं पवित्रं दिवा उमासमण्यमण्यम् ।

अणमण्यं पवित्रं दिवा उमासमण्यमण्यम् ॥

अणमण्यं पवित्रं दिवा उमासमण्यमण्यम् ।

अणमण्यं पवित्रं दिवा उमासमण्यमण्यम् ॥११९॥

अणमण्यं पवित्रं दिवा उमासमण्यमण्यम् ॥१२०॥

अणमण्यं पवित्रं दिवा उमासमण्यमण्यम् ।

विश्रावन्तो जेन मायस मायमा ॥१८०॥

सर्वकालान्तो नाना मया सर्वथाः ॥१८१॥
स्यात्, नाना मया मया मया जेन माय विद्यामायमा ॥१८२॥

विश्रावन् सर्वथाः सर्वतोमाना ।

सर्वथाशब्दः सर्वत्र भवतानी, यथा सर्वतोमानानी, यथा नियमवानो वा, यने कान्तामापेक्षी वा ? यदि सर्वत्र भवतानी सर्वकालान्तानी यने कान्तामापेक्षी वा, सर्वथादिमयो पठनात् सर्व-
शब्द, एवं विश्रावन्ति मिदं नः समीक्षाम् । यथा नियम-
वानो चेत्तर्हि सकलार्थानां तत्र प्रतीतिः कथं स्यात् ? नित्यः
अनित्यः एकः अनेकः भेदः अभेदः कथं प्रतीतिः स्यात् निय-
मितपक्षत्वात् ? ॥१८०॥

टिप्पण—नः=अस्माकं ।

तथाऽचैतन्यपक्षेऽपि सकलचैतन्योच्छेदः स्यात् ॥१८१॥

मूर्तस्यैकान्तेनात्मनो न मोक्षस्यावाप्तिः स्यात् ॥१८२॥

सर्वथाऽमूर्तस्यापि तथात्मनः संसारविलोपः स्यात् ॥१८३॥

एकप्रदेशस्यैकान्तेनाखण्डपरिपूर्णस्यात्मनोऽनेककार्यकारित्वं

एव हानिः स्यात् ॥१८४॥

टिप्पण—एकप्रदेशस्य=एकप्रदेशस्य पक्षस्यांगीकारे ।

सर्वथाऽनेकप्रदेशत्वेऽपि तथा तस्यानर्थकार्यकारित्वं स्व-
स्वभावशून्यताप्रसङ्गात् ॥१८५॥

परमभावग्रहणार्थः प्रयोजनमस्येति पर्यायार्थिकः

॥१६०॥

॥ इति पर्यायार्थिकस्य व्युत्पत्तिः ॥

—*—

पर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति पर्यायार्थिकः ॥१६१॥

अनादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येत्यानादिनित्य-
पर्यायार्थिकः ॥१६२॥

टिप्पण—अनादिनित्य पर्यायार्थिको यथा पुद्गलपर्यायो नित्यो
मेवादिः ।

सादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति सादिनित्य-
पर्यायार्थिकः ॥१६३॥

टिप्पण—सादिनित्यपर्यायार्थिको यथा भिन्नजीवपर्यायो नित्यः ।

शुद्धपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति शुद्धपर्यायार्थिकः

॥१६४॥

अशुद्धपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति अशुद्धपर्यायार्थिकः

॥१६५॥

॥ इति पर्यायार्थिकस्य व्युत्पत्तिः ॥

—*—

नैकं गच्छतीति निगमः, निगमोविकल्पस्तत्रभवो नैगमः

॥१६६॥

अभेदरूपतया वस्तुजातं संगृह्णातीति संग्रहः ॥१६७॥

टिप्पण—वस्तुजातं = वस्तुसमूहः ।

[illegible]

सौर्ज्यं समन्वोर्जं नाभातः, संज्ञेयः समन्ताः, परिष्कारः
परिष्कारमिश्रणः, शब्दाभावे समन्ताः, जानते समन्तः
नामिननयसिध्दन्तज्ञेयपादि मन्त्रार्थः समन्तार्थः मन्त्रासम्पार्थः
ज्ञेयगुणनग्निनामद्वयव्यवहारमन्त्रार्थः ॥२१॥

अध्यात्मजनों का कथन—

पुनरप्यध्यात्मभाषया नया उद्यमो ॥२१४॥

तावन्मूलनयो द्वौ निश्चयौ व्यवहारश्च ॥२१५॥

तत्र निश्चयनयोऽभेदविषयो, व्यवहारो भेदविषयः ॥२१॥

टिप्पण—अभेद विषयो क्षेत्रः सम्य मः निश्चयजनयः । भेदेन
ज्ञातुं योग्यः सो व्यवहारजनयः ।

तत्र निश्चयो द्विविधः शुद्धनिश्चयोऽशुद्धनिश्चयश्च ॥२१॥

तत्र निरुपाधिकगुणगुण्यभेद विषयकः शुद्धनिश्चयो
यथा केवलज्ञानादयो जीव इति ॥२१८॥

सोपाधिक विषयोऽशुद्धनिश्चयो यथा मतिज्ञानादयो
जीव इति ॥२१६॥

टिप्पण—उपाधिना कर्मजनितविकारेण सह वर्तत इति सोपाधिः।

व्यवहारो द्विविधः सद्भूतव्यवहारोऽसद्भूतव्यवहारश्च
॥२२०॥

तत्रैकवस्तुविषयः सद्भूतव्यवहारः ॥२२१॥

टिप्पण—यथा वृक्ष एक एव तल्लगनाः शाखा भिन्नाः; परन्तु वृक्ष एव तथा सद्भूतव्यवहारो गुणगुणिनोर्भेद कथनम् ।

मंगलनामक मंत्रादि

आत्मपदहतिः

मंगलनामक मंत्रादि मंगलार की प्रविष्टि—

गुणानां विस्तारं वक्ष्ये स्वभावानां तथैव च ।

पर्यायाणां विशेषेण नन्वा चोरे जिनेश्वरम् ॥१॥

अन्वयार्थ—(वीर जिनेश्वर) विशेष रूप से मोक्ष वक्ष्ये को देखें ।
वीर जिनेश्वर को श्रवण श्री महावीर भगवान को (नन्वा) समझार को
(ग्रह) से देवमेताचार्य (गुणानां), द्रव्यगुणों के (तथैव च) और उगी
से (स्वभावानां) स्वभावों के तथा (पर्यायाणां) पर्यायों के भी (विस्तार
विस्तार को (विशेषेण) विशेष रूप से (वक्ष्ये) कहता है । श्रवण को
स्वभाव और पर्यायों के स्वरूप विस्तारपूर्वक वर्णन करना है ।

विशेषार्थ—यह मंगलनाम श्लोक देशामयंक होने से मंगल, निमित्त
हेतु, परिमाण, नाम और कर्ता इन छह अधिकारों का मकारण प्रत्यक्ष
जाता है । कहा भी है—

मंगल-णिमित्त-हेतु परिमाणं नाम तद् य कर्तारं ।

चागरिय छ पि पच्छा वक्खाणुउ सत्यमाइरियो ॥

मंगल, निमित्त, हेतु, परिमाण, नाम और कर्ता इन छह अधिकारों
व्याख्यान करने के पश्चात् आचार्य शास्त्र का व्याख्यान करे ।

होता है। सर्व-निर्माण में तत्त्वज्ञान और तत्त्वज्ञान में परमात्मज्ञान होता है।

उन कथन में उन लोगों के मत का गणन हो जाता है जो शास्त्र के ज्ञान में निमित्त न मानकर यह कहते हैं कि शास्त्र में ज्ञान नहीं होता है।

परिमाण की व्याख्या—अक्षर, पद आदि की अपेक्षा परिमाण नग्न है और तद्वाच्य विषय की अपेक्षा परिमाण अनन्त है।

नाम—इस शास्त्र का नाम आलापपद्धति है।

कर्ता—अर्थकर्ता और ग्रन्थकर्ता के भेद से कर्ता दो प्रकार का है। श्री १००८ महाशय तीर्थंकर अर्थकर्ता हैं। श्री १०८ गौतम गणधर द्रव्यश्रुत के कर्ता हैं। श्री गौतम स्वामी, लोहाचार्य और जम्बू स्वामी ये तीन अनुवद्ध केवली हुए। इनके पश्चात् परिपाटी कम से पाँच श्रुतकेवली हुए। इसके पश्चात् ज्ञान हीन होना गया, किन्तु वह ज्ञान परम्परा से श्री १०८ देवसेन आचार्य को प्राप्त हुआ, जिन्होंने इस आलापपद्धति शास्त्र की रचना की है। इससे उस मत का खण्डन हो जाता है जो नवंधा यह मानते हैं कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य की पर्याय का कर्ता नहीं हो सकता है।

इस प्रकार मंगल, निमित्त, हेतु, परिमाण, नाम और कर्ता का व्याख्यान समाप्त हुआ।

आलापपद्धतिर्वचनरचनाऽनुक्रमेण

नयचक्रस्योपरि उच्यते ॥१॥

व्याख्ये—(आलाप) वदोच्चारण अर्थात् बोलचाल। (पद्धति) रीति या ढंग। (नयचक्र) सम्यग्ज्ञान के अवयव रूप नय ताका समूह।

सूत्रार्थ—वचनों की रचना के क्रम के अनुसार प्राकृतमय नयचक्र नामक शास्त्र के आधार पर से आलापपद्धति को (मैं देवसेनाचार्य) कहता हूँ।

अर्थात् इस आलापपद्धति शास्त्र की रचना प्राकृत-नयचक्र ग्रंथ के आधार पर हुई है।

सा च किमर्थम् ? ॥२॥

सूत्रार्थ—इस आलापपद्धति ग्रंथ की रचना किस नियम की गई है ?

जो समस्त द्रव्यों को अवगाहन देने वह आकाश द्रव्य है। अथवा अपेक्षा आकाश द्रव्य मन द्रव्यों में नष्ट है, मन-व्यापी है, इसलिए समस्त द्रव्यों को अवगाहन देने में समर्थ है। अन्य द्रव्य भी परस्पर अवगाहन देते हैं, किन्तु मन-व्यापी नहीं होने में वे समस्त द्रव्यों को अवगाहन नहीं कर सकते, इसीलिये अवगाहनहेतुत्व आकाश द्रव्य का लक्षण कहा गया है। धर्म-द्रव्य के अभाव के कारण अलोकाकाश में कोई द्रव्य नहीं जाता। इसलिये वह किसी को अवगाहन नहीं देता है। फिर भी उसमें अवगाहन की शक्ति है। इस प्रकार अलोकाकाश में भी अवगाहन-हेतुत्व नष्ट घटित हो जाता है। इससे, कार्य होने पर ही निमित्त कारण कहना इस सिद्धान्त का खण्डन हो जाता है। निमित्त अपने कारणपने की शक्ति निमित्त कहलाता है।

जो द्रव्यों के वर्तन में गहकारी कारण हो वह कालद्रव्य है। काल अभाव में पदार्थों का परिणामन नहीं होगा। परिणामन न हो तो द्रव्य वही भी न होगी। सर्व शून्य का प्रसंग आवेगा।^१

द्रव्य का लक्षण—

सद्द्रव्यलक्षणम् ॥६॥

मूत्रार्थ—द्रव्य का लक्षण सत् है।

उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥७॥

मूत्रार्थ—जो उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त है वह सत् है।

विशेषार्थ—अन्तरंग और बहिरंग निमित्त के वश से जो नवीन अवस्था उत्पन्न होती है उसे उत्पाद कहते हैं। जैसे, मिट्टी के पिंड की घट पदार्थ पूर्व अवस्था के नाश को व्यय कहते हैं। जैसे, घट की उत्पत्ति होने पर मिट्टी की आकृति का व्यय। अनादिकालीन पारिणामिक स्वभाव है, उसका व्यय और

१. सर्वार्थनिष्ठि अ० ५। २. 'कालाभावे न भावानां परिणामनं दंतरान्। न द्रव्यं नापि पथ्ययिः सवभावाः प्रसज्यते॥' (नियमसार भाष्य ३: की टीका में उद्धृत)। ३. तत्त्वार्थ सूत्र अ० ५ सूत्र २६। ४. तत्त्वार्थ सूत्र अ० ५ सूत्र ३०।

प्रत्येकमष्टौ सन्निभाम् ॥१०॥

सूत्रार्थ—इन दस सामान्य गुणों में से प्रत्येक द्रव्य में आठ-आठ गुण हैं और दो-दो गुण नहीं हैं ।

जीव द्रव्य में चेतनत्व और मूर्तत्व ये दो गुण नहीं हैं । पुद्गल द्रव्य में चेतनत्व और अमूर्तत्व ये दो गुण नहीं हैं । धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य और कालद्रव्य इन चार द्रव्यों में चेतनत्व और मूर्तत्व ये दो गुण नहीं हैं । इस प्रकार दो-दो गुणों को छोड़कर प्रत्येक द्रव्य में आठ-आठ गुण होते हैं ।

जीव में अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, चेतनत्व और अमूर्तत्व ये आठ गुण होते हैं ।

पुद्गल द्रव्य में अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, अचेतनत्व, मूर्तत्व ये आठ गुण होते हैं ।

धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य, कालद्रव्य इन चार द्रव्यों में अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, अचेतनत्व और अमूर्तत्व ये आठ गुण होते हैं ।

अब द्रव्यों के विशेष गुणों को बतलाते हैं ।

ज्ञानदर्शनमुखवीर्याणि स्पर्शरसगन्धवर्णाः गतिहेतुत्वं स्थितिहेतुत्वमवगाहहेतुत्वं वर्तनाहेतुत्वं चेतनत्वमचेतनत्वं मूर्तत्वममूर्तत्वं द्रव्याणां षोडश विशेषगुणाः ॥११॥

सूत्रार्थ—ज्ञान, दर्शन, मुख, वीर्य, स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण, गतिहेतुत्व, स्थितिहेतुत्व, अवगाहनहेतुत्व, वर्तनाहेतुत्व, चेतनत्व, अचेतनत्व, मूर्तत्व, अमूर्तत्व ये द्रव्यों के सोलह विशेष गुण हैं ।

विशेषार्थ—जिस शक्ति के द्वारा आत्मा पदार्थों को साकार जानता है सो ज्ञान है ।

भूतार्थ का प्रकाश करने वाला ज्ञान होता है । अथवा सद्भाव के निश्चय करने वाले धर्म को ज्ञान कहते हैं ।

१. 'भूतार्थप्रकाशक ज्ञानम् । अथवा सद्भावविनिश्चयोपलम्भकं ज्ञानम् ।' (धवन पृ० १ पृ० १८२ व १८३)

व्याख्यातिकार

प्रकाशना ११ में द्रव्य का वस्तुत्व

गुणपरमेयनद्रव्यम् ॥२७॥

सूत्रार्थ—गुण-पर्याय वाचा द्रव्य है ।

विवेचार्थ—यद्विना सूत्र ३ व ७ में द्रव्य का वस्तुत्व 'यत्' तथा 'जगत्' व्यव-धोव्य' कह चुके हैं फिर भी यदा प्रकाशना ११ में द्रव्य का वस्तुत्व कहा गया है । द्रव्य का गुण और पर्यायों में कदाचित् भेद है इसलिये सूत्र में 'यत्' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है । गुण अन्तर्णी होते हैं और पर्याय बहिर्णी होती हैं । कहा भी है—

गुण इदि द्रव्यविद्भागं द्रव्यविकारो हि पञ्जवो भविष्ये ।

तेहि अणूणां द्रव्यं अनुदपसिद्धं ह्ये गिच्छं ॥^१

अर्थ—द्रव्य में भेद करने वाले धर्म को विशेष गुण और द्रव्य के विना को पर्याय कहते हैं । द्रव्य इन दोनों से युक्त होता है । तथा वह अणुतमिदम्

१. यही सूत्र मोक्षशास्त्र अ० ५ में सूत्र ३८ है । २. सर्वार्थसिद्धि ५/८

में जीव में मूर्तित्व स्थापित हो जाता है । जीव चार द्रव्य (धर्म, अधर्म, आकाश, काल) पुरुषण के माध्यम को प्राप्त नहीं होने, इसलिए उनमें मूर्त-स्वभाव का निषेध किया गया है ।

धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य, कालद्रव्य ये चारों द्रव्य वंश को प्राप्त नहीं होते इसलिए उनमें विभावस्वभाव, उपनक्षितस्वभाव और अशुद्धस्वभाव भी नहीं होते, क्योंकि अन्य द्रव्य के माध्यम को प्राप्त होने पर ही द्रव्य अशुद्ध होता है, विभावस्व परिणमता है और कथंचित् उस अन्य द्रव्य के स्वभाव को ग्रहण करने से अन्यद्रव्य के स्वभाव का उपचार होता है । जीव और पुद्गल वंश को प्राप्त होते हैं, इसलिए उनमें विभावस्वभाव, उपनक्षित स्वभाव और अशुद्धस्वभाव का कथन किया गया है ।

कालद्रव्य में स्वभावों की संख्या—

तत्र बहुप्रदेशत्वविना कालस्य पंचदश स्वभावाः ॥३१॥

सुमार्थ—(इक्कीस स्वभावों में से पांच स्वभावों का निषेध करके सूत्र ३० में शेष सोलह स्वभाव धर्मादिक तीन द्रव्यों में बतलाये गये थे) उन सोलह स्वभावों में से बहुप्रदेश-स्वभाव के बिना शेष पन्द्रह स्वभाव कालद्रव्य में पाये जाते हैं ।

विशेषार्थ—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश ये पांच द्रव्य बहुप्रदेश हैं, इसीलिये इनको पंचास्तिकाय कहा गया है, किन्तु कालद्रव्य अर्थात् काल एकप्रदेशी है, इसलिये उसको बहुप्रदेशी अर्थात् कायवान् नहीं कहा गया है ।

‘अजीवकायाधर्मधर्माकाशपुद्गलाः ।’ ॥५॥ १॥ । तत्त्वार्थसूत्र

अर्थ—धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य, पुद्गलद्रव्य ये चारों धर्म भी हैं और कायवान् भी हैं ।

जीव, पुद्गल, धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य यद्यपि बहुप्रदेशी हैं तथापि अखण्ड की अपेक्षा से इनमें एकप्रदेशी-स्वभाव भी है ।

यद्यपि पुद्गल परमाणु भी एकप्रदेशी है तथापि स्निग्ध-रुक्ष गुणों के कारण वह पुद्गल परमाणु वंश को प्राप्त होने पर बहुप्रदेशी हो जाता है ।

प्रमाण का लक्षण—

सम्यग्ज्ञानं प्रमाणम् ॥३४॥

सूत्रार्थ—सम्यग्ज्ञान को प्रमाण कहते हैं ।

विशेषार्थ—संशय विपर्यय और अनव्यवसाय से रहित ज्ञान को सम्यग्ज्ञान कहते हैं । समीचीन ज्ञान को सम्यग्ज्ञान कहते हैं ।

अन्यूनमनतिरिक्तं यथातथ्यं विना च विपरीतात् ।

निःसन्देहं वेद यदाहुस्तज्ज्ञानमागमिनः ॥४२॥

[रत्नकरण्ड आकर]

अर्थ—जो ज्ञान न्यूनता रहित, अधिकता रहित, विपरीतता रहित, सन्देह रहित, जैसा का तैसा जानता है, शास्त्र के ज्ञाता पुरुष उसको ज्ञान कहते हैं ।

अनादि को सादि रूप जानना, अनन्त (अन्त रहित) को सन्त जानना, अविद्यमान पर्याय को विद्यमान रूप से जानना, अभाव रूप को सद्भाव रूप से जानना, अनियत को नियत रूप जानना सम्यग्ज्ञान नहीं क्योंकि उसने यथार्थ नहीं जाना है ।

प्रमाण के भेद—

तद्द्वेधा प्रत्यक्षेतरभेदात् ॥३५॥

सूत्रार्थ—प्रत्यक्ष प्रमाण और इतर अर्थात् परोक्ष प्रमाण के भेद से प्रमाण दो प्रकार का है ।

विशेषार्थ—तत्त्वार्थ सूत्र में भी 'तत्प्रमाणे ॥१/१०॥' इस सूत्र प्रमाण के दो भेद बतलाये हैं । इतर से अभिप्राय परोक्ष का है । प्रत्यक्ष प्रमाण, शब्द प्रमाण परोक्षप्रमाण हैं । जो इन्द्रिय ज्ञान है वह परोक्षप्रमाण है ।

प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष । 'अक्षणेति व्याप्नोति जानातीत्यक्ष' इस प्रकार अक्ष शब्द का अर्थ आत्मा है । केवल आत्मा के प्रति जो ज्ञान है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं । [सर्वार्थसिद्धि १/१२]

मान से उनमें प्रथम व्यवहार किया गया है । तथा उभय और जन आदि के लाने में लगे हुए किसी पुरुष से कोई पूछता है कि आप क्या कर रहे हैं ? उसने कहा—भात पका रहा हूँ । उस समय भात पर्याप्त मतिहित नहीं है । केवल भात के लिये किये गये व्यापार में भात का प्रयोग किया गया है । इस प्रकार का जितना व्यवहार अनिष्टप्रसन्न अर्थ के अवलम्बन से संकल्प मात्र से विषय करता है वह सब नैगम नय का विषय है । [सर्वार्थसिद्धि १/३३]

संग्रह नयः—जो नय अभेद रूप से सम्पूर्ण वस्तु समूह को विषय करता है वह संग्रह नय है ।^१

भेद सहित सब पर्यायों को अपनी जाति के अविरोध द्वारा एक मानकर सामान्य से सब को ग्रहण करने वाला नय संग्रह नय है । यथा—सत्, द्रव्य और घट आदि । 'सत्' कहने पर सत् इस प्रकार के वचन और विज्ञान की अनुवृत्ति रूप लिंग से अनुमित सत्ता के आधारभूत सब पदार्थों का सामान्य रूप से संग्रह हो जाता है । 'द्रव्य' ऐसा कहने पर भी 'उन उन पर्यायों को द्रव्यता है, प्राप्त होता है' इस प्रकार इस व्युत्पत्ति से युक्त जीव, अजीव और उनके सब भेद प्रभेदों का संग्रह हो जाता है । तथा 'घट' ऐसा कहने पर घट इस प्रकार की बुद्धि और घट, इस प्रकार के शब्द की अनुवृत्ति रूप लिंग से अनुमित सब घट पदार्थों का संग्रह हो जाता है । [सर्वार्थसिद्धि १/३३]

व्यवहारनय—संग्रह नय से ग्रहण किये हुए पदार्थ को भेद रूप से व्यवहार करता है, ग्रहण करता है, वह व्यवहार नय है ।^१

संग्रह नय के द्वारा ग्रहण किये गये पदार्थों का विधिपूर्वक व्यवहार अर्थात् भेद करना व्यवहारनय है । सर्व संग्रह नय के द्वारा जो वस्तु ग्रहण की गई है, वह अपने उत्तर भेदों के बिना व्यवहार कराने में असमर्थ है, इस लिये व्यवहारनय का आश्रय लिया जाता है । यथा—संग्रह नय का विषय जो द्रव्य है, वह जीव अजीव की अपेक्षा किये बिना व्यवहार कराने में असमर्थ है, इसलिये जीव द्रव्य है और अजीव द्रव्य है, इस प्रकार के व्यवहार का

रूप लिया नहीं पाई जाती ।

[जयघवल पु० १ पृ० २२१]

तथा इस ऋजुमूत्र नय की दृष्टि में 'काक कृष्ण होता है' यह वाक्य भी नहीं बन सकता है, क्योंकि जो कृष्ण है वह कृष्णरूप ही है, काक नहीं है । यदि कृष्ण को काकरूप माना जाय तो अमर आदिक को भी काकरूप मानने की आपत्ति प्राप्त होती है । उसी प्रकार काक भी काकरूप है कृष्णरूप नहीं है, क्योंकि यदि काक को कृष्णरूप माना जाय तो काक के पीले पित्त सफेद हृद्दी और ज्ञान रुधिर आदिक को भी कृष्णरूप मानने की आपत्ति प्राप्त होती है ।

[जयघवल पु० १ पृ० २२१]

इस ऋजुमूत्र नय की दृष्टि से विशेषण-विशेष्य भाव भी नहीं बनता है, क्योंकि भिन्न दो पदार्थों में तो विशेषण-विशेष्य भाव बन नहीं सकता, क्योंकि भिन्न दो पदार्थों में विशेषण-विशेष्य भाव मानने पर अव्यवस्था की आपत्ति प्राप्त होती है, अर्थात् जिन किन्हीं दो पदार्थों में भी विशेषण-विशेष्य भाव हो जायगा । उसी प्रकार अभिन्न दो पदार्थों में विशेषण-विशेष्य भाव नहीं बन सकता, क्योंकि अभिन्न दो पदार्थों का अर्थ एक पदार्थ ही होता है और एक पदार्थ में विशेषण-विशेष्य भाव के मानने में विरोध आता है ।

[जयघवल पु० १ पृ० २२६]

इस ऋजुमूत्र नय की दृष्टि में संयोग अथवा समवाय सम्बन्ध नहीं बनता है । इसीलिये सजातीय और विजातीय दोनों प्रकार की उपाधियों से रहित केवल शुद्ध परमाणु ही है, अतः जो स्तंभादिकरूप स्कन्धों का प्रत्यय होता है वह ऋजुमूत्र नय की दृष्टि में भ्रान्त है । तथा वह परमाणु निरवयव है, क्योंकि परमाणु के ऊर्ध्वभाग, अधोभाग और मध्यभाग आदि अवयवों के मानने पर अनवस्था दोष की आपत्ति प्राप्त होती है और परमाणु के अपरमाणुपने का प्रसंग प्राप्त होता है ।

[जयघवल पु० १ पृ० २३०]

इस ऋजुमूत्र नय की दृष्टि में वन्ध्य-वन्धक भाव, वध्य-घातक भाव, दाह्य-दाहकभाव और संसारादि कुछ भी नहीं बन सकते ।

[जयघवल पु० १ पृ० २३२]

इस ऋजुमूत्र नय की दृष्टि में ग्राह्य-ग्राहकभाव भी नहीं बनता है । अतः

नश्वर है। यहाँ पर नश्वर शब्द एवम् अनात्म और पुनर्जन्म शब्द दिव्यमान है। इसलिये एकत्वजन के साधन में विज्ञान का कथन करने में संगत्या-व्यभिचार है। भूत आदि काल के स्थान में भविष्यत् सादि काल का कथन करना वास्तव्य-व्यभिचार है। जैसे—विष्णुस्मृत्याऽप्य पुनो जनिता' जिनके समस्त वित्त को देव लिया है ऐसा उनको पुन होगा। यहाँ पर 'विश्ववदृष्ट्वा' शब्द भूतकालीन है और 'जनिता' शब्द भविष्यत्कालीन है। अतः भविष्य अर्थ के विषय में भूतकालीन प्रयोग करना काल-व्यभिचार है। एक कारक के स्थान पर दूसरे कारक के प्रयोग करने को साधन-व्यभिचार कहते हैं। उत्तमपुरुष के स्थान पर मध्यमपुरुष और मध्यमपुरुष के स्थान पर उत्तमपुरुष आदि प्रयोग करने को पुरुष-व्यभिचार कहते हैं।

इस प्रकार जितने भी निष्क आदि व्यभिचार हैं वे सभी अयुक्त हैं, क्योंकि अन्य अर्थ का अन्य अर्थ के साथ सम्बन्ध नहीं हो सकता। इसलिये जैसा निग हो, जैसी संख्या हो और जैसा साधन हो उन्ही के अनुसार शब्दों का कथन करना उचित है।

[जयघवल पृ० १ पृ० २३५-२३७]

समभिरुद्धनयः—आगे सूत्र २०१ में कहेंगे 'परस्परैणाभिरुद्धाः समभिरुद्धाः। शब्दभेदेऽप्यर्थभेदो नास्ति, यथा शक्र इन्द्रः पुरंदर इत्यादयः समभिरुद्धाः।' परस्पर में अभिरुद्ध शब्दों को ग्रहण करने वाला नय समभि-रुद्ध नय कहलाता है। इस नय के विषय में शब्द-भेद रहने पर भी अर्थ-भेद नहीं है, जैसे शक्र, इन्द्र और पुरंदर ये तीनों ही शब्द देवराज के पर्यायवाची होने से देवराज में अभिरुद्ध हैं। किन्तु शोलापुर से प्रकाशित नयचक्र पृ० १२ पर लिखा है—'शब्दभेदेऽप्यर्थभेदो भवत्येवेति' अर्थात् शब्द-भेद होने पर अर्थ-भेद होता ही है। जयघवल में भी इस प्रकार कहा है—

शब्दभेद से जो नाना अर्थों में अभिरुद्ध है अर्थात् जो शब्दभेद से अर्थभेद मानता है वह समभिरुद्धनय है। जैसे एक ही देवराज इन्दनक्रिया का कर्ता होने से अर्थात् आज्ञा और ऐश्वर्य आदि से युक्त होने के कारण इन्द्र कहलाता है और वही देवराज शक्रनात् अर्थात् सामर्थ्यवाला होने के कारण शक्र कह

एवंभूत नय—जिस नय में नांभान लिया की प्रधानता होती है वह
एवंभूत नय है ।^१

जिस शब्द का जिस विभाजन अर्थ है तदनुग क्रिया से परिणत मन
ही उस शब्द का प्रयोग करना युक्त है, अन्य समय में नहीं, ऐसा विन
का अभिप्राय है वह एवंभूत नय है । इस नय में पदों का समास नहीं
है, क्योंकि जो स्वल्प और काल की अपेक्षा भिन्न हैं उनको एक मान
विरोध आता है । यदि कहा जाय कि पदों में एककालवृत्ति रूप समास बन
जाता है सो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि पद क्रम से ही उत्पन्न होते
हैं और वे जिस क्षण में उत्पन्न होते हैं, उसी क्षण में विनष्ट हो जाते हैं
इसलिये अनेक पदों का एक काल में रहना नहीं बन सकता । तब इन
में जिस प्रकार पदों का समास नहीं बन सकता है, उसी प्रकार घ, ट, ड
वर्णों का भी समास नहीं बन सकता, क्योंकि अनेक पदों के समास मानने में भी
जो दोष कह आये हैं, वे सब दोष अनेक वर्णों के समास मानने में भी प्रा
होते हैं । इसलिये एवंभूत नय की दृष्टि में एक ही वर्ण एक अर्थ का वाक्य
है ।

[जयधवल पु० १ पृ० २४०]

उपनयाश्च कथ्यन्ते ॥४२॥

सूत्रार्थ—अब उपनयों का कथन करते हैं ।

उपनय के लक्षण कथन करने के लिये सूत्र कहते हैं ।

नयानां समीपा उपनयाः ॥४३॥

सूत्रार्थ—जो नयों के समीप में रहें वे उपनय हैं ।

विशेषार्थ—‘आत्मन उपसमीपे प्रमाणादीनां वा तेषामुपसमीपे
नयतीत्युपनयः ।’ [संस्कृत नय चक्र पृ० ४५] अर्थात् जो आत्मा के वा
प्रमाणादिकों के अत्यन्त निकट पहुँचाता है वह उपनय है ।

यह उपनय भी वस्तु के यथार्थ धर्म का कथन करता है, अपनयों
का कथन नहीं करता, इसलिये इसके द्वारा भी वस्तु का यथार्थ बोध होता है ।

एकेन्द्रिय जीव का उपचार । २. दर्पणरूप पर्याय में अन्य पर्याय का उपचार । किसी के प्रतिबिम्ब को देखकर जिसका वह प्रतिबिम्ब है उस प्रतिबिम्बरूप बतलाना । ३. मतिज्ञान मूर्त है—यहां विजाति ज्ञान विजाति मूर्तगुण का आरोपण है । ४. जीव-अजीव ज्ञेय अर्थात् विषयक हैं । यहां जीव-अजीव द्रव्य में ज्ञानगुण का उपचार है । ५. बहुप्रदेशी है अर्थात् परमाणु पुद्गल द्रव्य में बहुप्रदेशी पर्याय का उपचार है । ६. श्वेत प्रसाद । यहां पर श्वेत गुण में प्रसाद द्रव्य का आरोपण है । ७. ज्ञानगुण के परिणामन में ज्ञान-पर्याय का ग्रहण, गुण में पर्याय का आरोपण है । ८. स्कंध को पुद्गल द्रव्य कहना, पर्याय में द्रव्य का उपचार है । ९. इसका शरीर रूपवान है । यहां पर शरीर रूप पर्याय में गुण का उपचार किया गया है ।

मृत्यु के अभाव में प्रयोजनवश या निमित्तवश जो उपचार होता है उपचरित-असद्वृत्त-व्यवहारनय है ।^१ जैसे माजरी (बिलाव) को कहना । यहां पर माजरी और सिंह में सादृश्य सम्बन्ध के कारण में सिंह का उपचार किया गया है, क्योंकि सम्बन्ध के बिना उपचार न गकता । जैसे चूहे आदि में सिंह का उपचार नहीं किया जा सकता । सम्बन्ध अनेक प्रकार का है । जैसे—अविनाभाव सम्बन्ध, संश्लेष सम्बन्ध, गाम-परिणामी सम्बन्ध, श्रद्धा-श्रद्धेय सम्बन्ध, ज्ञान-ज्ञेय सम्बन्ध, चरित-गाम सम्बन्ध इत्यादि । ये सब उपचरित-असद्वृत्त-व्यवहारनय के विषय हैं अर्थात् 'वस्तुतः का श्रद्धान सम्बन्धदर्शन है' यह उपचरित-असद्वृत्त-व्यवहारनय विषय है, क्योंकि यहां पर श्रद्धा-श्रद्धेय सम्बन्ध पाया जाता है । 'चरित' भी उपचरित-असद्वृत्त-व्यवहारनय का विषय है, ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध दर्शाता है, एवं जो ज्ञेय उनका ज्ञायक संबंध होता है । इत्यादि

द्वदानीमतेषां भेदा उच्यन्ते ॥४५॥

संग्रह — एव उच्यते (नयीं और उपनयीं के) भेदों को कहते हैं ।

१. विष्णु सूत्र २१० । २. आलापपद्धति सूत्र २१२ । ३. आलापपद्धति सूत्र २१३ ।

सूत्रार्थ—उत्पाद-व्यय को गौण करके (अप्रधान करके) सत्ता (ध्रुव) को ग्रहण करने वाली शुद्ध द्रव्याधिक नय है। जैसे—द्रव्य नित्य है।

विशेषार्थ—द्रव्य का लक्षण उत्पाद-व्यय-ध्रुव्य है।^१ तथा द्रव्य अनेकान्तात्मक अर्थात् नित्य-अनित्य-आत्मक है। किन्तु शुद्ध द्रव्याधिक नय उत्पाद-व्यय को अप्रधान करके मात्र ध्रुव्य को ग्रहण करके (नित्य-अनित्य-आत्मक) द्रव्य को नित्य वतनाती है। अनेकान्त दृष्टि में इस शुद्ध-द्रव्याधिक नय का विषय यथार्थ नहीं है तथापि एक धर्म को (अनित्य धर्म को) गौण करके नित्य धर्म को मुख्य करने से इस नय के विषय को सर्वथा अयथार्थ नहीं कहा जा सकता।

उत्पादवयं गौणं किञ्चा जो गृह्य केवला सत्ता।

भरणइ सो सुद्वरणओ इह सत्तागाहओ समए ॥१६॥ [नयचक्र]

अर्थात्—उत्पाद-व्यय को गौण करके मात्र ध्रुव को ग्रहण करने वाला नय आगम में सत्ताग्राहक शुद्ध नय है।

३. भेदकल्पनानिरपेक्षः शुद्धो द्रव्याधिको यथा निजगुण-पर्यायस्वभावाद् द्रव्यमभिन्नम् ॥४६॥

सूत्रार्थ—शुद्ध द्रव्याधिक नय भेदकल्पना की अपेक्षा से रहित है, जैसे—निज गुण से, निज पर्याय से और निज स्वभाव से द्रव्य अभिन्न है।

विशेषार्थ—यद्यपि संज्ञा, संख्या, लक्षण और प्रयोजन की अपेक्षा गुण और द्रव्य में, पर्याय और द्रव्य में तथा स्वभाव और द्रव्य में भेद है किन्तु प्रदेश की अपेक्षा गुण-द्रव्य में, पर्याय-द्रव्य में, स्वभाव-द्रव्य में भेद नहीं है अर्थात् अनेकान्त रूप से द्रव्य भेद-अभेद-आत्मक है।

शुद्ध द्रव्याधिक नय का विषय भेद नहीं है, मात्र अभेद है। भेद विवक्षित को गौण करके शुद्ध-द्रव्याधिक नय की अपेक्षा गुण-पर्याय-स्वभाव का द्रव्य अभेद है, क्योंकि प्रदेश भेद नहीं है।

विशेषार्थ—शुद्ध-द्रव्याधिक नय का विषय मात्र ध्रौव्य है ।^१ क्योंकि उत्पाद-व्यय पर्यायाधिक नय का विषय है । द्रव्य का लक्षण सत् है और सत् का लक्षण उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यमयी है ।^२ इस प्रकार द्रव्य का लक्षण उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य रूप है, किन्तु उत्पाद-व्यय पर्यायाधिक नय का विषय होने के कारण उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक द्रव्य को—अशुद्ध द्रव्य को—अशुद्ध द्रव्याधिक नय का विषय कहा है ।

उत्पादव्ययविभिन्ना सत्ता गहिऊण भणइ तिदयत्तं ।

द्ववस्स एससमये जो हु असुद्धो इवे विदिओ ॥२२॥ [नयवत्]

अर्थात्—उत्पाद-व्यय मिश्रित द्रुव अर्थात् एक समय में इन तीन मयी द्रव्य को ग्रहण करने वाला दूसरा अशुद्ध नय है ।

६. भेदकल्पनासापेक्षोऽशुद्धद्रव्याधिको यथात्मनो दर्शन-जानादयोगुणाः ॥२२॥

सूत्रार्थ—भेदकल्पना-सापेक्ष द्रव्य अशुद्ध-द्रव्याधिक नय का विषय है, जेने—आत्मा के ज्ञान-दर्शनादि गुण हैं ।

विशेषार्थ—आत्मा एक असृष्ट द्रव्य है, उसमें ज्ञान-दर्शन आदि गुण नहीं हैं, ऐसा शुद्ध द्रव्याधिक नय का प्रयोजन है । कहा भी है—

‘गुणि गुणं गु चरित्तं गु दंसणं जाणगो सुद्धो ।’

अर्थात्—आत्मा में न ज्ञान है, न चारित्र्य है, न दर्शन है, वह तो जायक, शुद्ध है ।

आत्मा में ज्ञान, दर्शन आदि गुणों की कल्पना करना अशुद्ध-द्रव्याधिक नय का विषय है । अर्थात् एक असृष्ट द्रव्य में गुणों का भेद करना अशुद्ध द्रव्याधिक नय का विषय है ।

भेदे सदि सम्बंधं गुणगुणियडंण कुणइ जो दव्वे ।

सो वि असुद्धो दिट्ठो सदिओ सो भेदकप्पेण ॥२३॥ [नयवत्]

१. आलापपद्धति सूत्र ४८ । २. आलापपद्धति सूत्र ६ व ७ ।

३. समयसार गाथा ७ ।

मूत्रार्थ—स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभाव की अपेक्षा द्रव्य को अस्ति ह्य से ग्रहण करने वाला नय स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक नय है ।

विशेषार्थ—कल्याण पावर प्रिंटिंग प्रेस शोलापुर से प्रकाशित संस्कृत नयचक्र पृ० ३ व ५ पर इस नय का स्वरूप निम्न प्रकार कहा गया है—

‘परद्रव्यादीनां विवक्षामकृत्वा स्वद्रव्यस्वक्षेत्रस्वकालस्वभावोपेक्षया द्रव्यस्यास्तित्वमस्तीति स्वद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिकनयः ।’

अस्तित्वं वस्तुरूपस्य स्वद्रव्यादिचतुष्टयात् ।

एवं यो वक्तव्यभिप्रायं स्वादिग्राहकनिश्चयः ॥८॥

अर्थ—परद्रव्यादि की विवक्षा न कर, स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल और स्वभाव की अपेक्षा से द्रव्य के अस्तित्व को अस्तिरूप से ग्रहण करने वाला नय स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक नय है । अथवा स्वद्रव्यादि चतुष्टय से वस्तु स्वरूप का अस्तित्व बताना जिस नय का अभिप्राय है वह स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक नय है ।

आगे सूत्र १८८ में भी इस नय का कथन है ।

६. परद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिको यथा परद्रव्यादिचतुष्टयापेक्षया द्रव्यं नास्ति ॥५५॥

मूत्रार्थ—परद्रव्य परक्षेत्र परकाल परस्वभाव की अपेक्षा द्रव्य नास्ति ह्य है ऐसा परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक नय है ।

विशेषार्थ—संस्कृत नयचक्र में इस नय का स्वरूप इस प्रकार कहा गया है—

‘स्वद्रव्यादीनां विवक्षामकृत्वा परद्रव्यपरक्षेत्रपरकालपरभावोपेक्षया द्रव्यस्य नास्तित्वकथकः परद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिकनयः ।’ [पृ० ३]

नास्तित्वं वस्तुरूपस्य परद्रव्याद्यपेक्षया ।

वांछितार्थेषु यो वक्ति परद्रव्याद्यपेक्षकः ॥६॥ [पृ० ४]

अर्थात्—शुद्ध और अशुद्ध के उपचार से रहित जो नय द्रव्य के स्वभाव को ग्रहण करता है वह परमभावग्राहक द्रव्याधिक नय है ।

आगे सूत्र ११० में भी इस नय का कथन है ।



अथ पर्यायाधिकस्य पङ् भेदाः ॥५७॥

मूत्रार्थ—अब पर्यायाधिक नय के छः भेदों का कथन करते हैं—

१. अनादिनित्यपर्यायाधिको यथा पुद्गलपर्यायो नित्यो मेवादिः ॥५८॥

मूत्रार्थ—अनादि-नित्य पर्यायाधिक नय जैसे मेघ आदि पुद्गल की पर्याय नित्य है ।

विशेषार्थ—मेघ, कुलाचल पर्यंत, अकृत्रिम जिनविष-जिनालय आदि वे सब पुद्गल की पर्यायें अनादिकाल से हैं अनन्तकाल तक रहेंगी, इनका कभी विनाश नहीं होगा अतः ये अनादि-नित्य-पर्यायाधिक नय के विषय हैं । क्योंकि सभी पर्यायें विनाश को प्राप्त हों ऐसा एकान्त नहीं है । कहा भी है—

‘होदु विचंजणपज्जाओ, ए च विचंजणपज्जायस्स सव्वस्स विण्णासेण होद्व्वमिदि गियमो अत्थि, एयंतवादप्पसंगादो । ए च ए विण्णस्सदि त्ति दव्वं होदि, उप्पाय-ट्ठिदि-भंगसंगयस्स दव्वभाव-व्भुवगमादो ।’

[घवल पु० ७ पृ० १७८]

अर्थ—‘प्रमव्यत्व’ जीव की व्यंजन पर्याय भले ही हो, किन्तु सभी व्यंजन पर्याय का नाश अवश्य होना चाहिये, ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि ऐसा मानने में एकान्तवाद का प्रसंग आ जायगा । ऐसा भी नहीं है कि जो वस्तु विनष्ट नहीं होती वह द्रव्य ही होना चाहिये, क्योंकि जिसमें उत्पाद-प्राप्ति और व्यव पाये जाने हैं उसे द्रवरूप में स्वीकार किया गया है ।

प्राकृत नयचक्र में भी कहा है—

अक्कट्टिमा अग्निहणा सत्तिमूराट्ठण पज्जयो गिह्णइ ।

जो सो अग्गाइग्निच्चो जिण्णभग्निओ पज्जयत्थिणओ ॥२॥

विशेषार्थ—पर्यायाधिक नय के प्रथम भेद का विषय अनादिनित्य पर्याय है और इस दूसरे भेद का विषय सादि-नित्य पर्याय है। सिद्धपर्याय ज्ञानावरणादि आठों कर्मों के क्षय से उत्पन्न होती है अतः सादि है किन्तु इस पर्याय का कभी नाश नहीं होगा इसलिये नित्य है। उसी प्रकार ज्ञानावरण कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाला धायिक ज्ञान, दर्शनावरण कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाला धायिक दर्शन, मोहनीय कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाले धायिक सम्प्रदर्शन, धायिक चारित्र्य तथा अनन्त मुष, अन्तराय कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाले धायिक दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य के मूल धायिक भाव भी सादि-नित्य पर्याय हैं। कहा भी है—

‘जीवा एव ज्ञायिकभावेन साद्यनिधनाः।’

[पञ्चास्तिकाय गा० ५३ टीका]

अर्थात्—धायिक भावों की अपेक्षा जीव भी सादि-अनिधन है।

इसी बात को प्राकृत नयचक्र में भी कहा गया है—

कम्मखयादुप्पण्णो अचिणासी जो हु कारणाभावे।

इदमेवमुच्चरन्तो भण्णइ सो साइणिच्च एत्थो ॥२०१॥ [पृ० ७४]

अर्थात्—कर्मों के क्षय से उत्पन्न होने वाले भाव अविनाशी हैं, क्योंकि कर्मोदयरूप बाधक कारण का अभाव है। इन धायिक भावों को विषय करने वाली सादि-नित्य पर्यायाधिक नय है।

संस्कृत नयचक्र में भी कहा है—

पर्यायार्थी भवेत्सादि व्यये सर्वस्य कर्मणः।

उत्पन्नसिद्धपर्यायप्रादुको नित्यरूपकः ॥२॥

[पृ० ६]

आदत्ते पर्यायं नित्यं सादि च कर्मणोऽभावात्।

स सादि नित्यपर्यायार्थिकनामा नयः स्मृतः ॥८॥ [पृ० ४१]

‘शुद्धनिश्चयनयविवक्षां कृत्वा सकलकर्मक्षयोद्भूत चरमशरीराकारपर्यायपरिणतिरूपशुद्धसिद्धपर्यायः सादिनित्यपर्यायार्थिक नयः ॥२॥

[पृ० ७]

अर्थात्—शुद्ध पर्याय की विवक्षा न कर, कमजोरित नास्तिकि विभा
पर्यायों की जीवस्वरूप बतलाने वाला नय अनित्य-अशुद्ध-पर्यायाधिक नय है।

प्राकृत नयचक्र में भी कहा है—

भणइ अणिच्चामुद्धा चउगइजीवाणं पज्जया जो हु ।

छोइ विभावअणिच्चो असुद्धओ पज्जयत्थिणओ ॥२०४॥

[७० ७५]

अर्थात्—जो नय संगरी जीवों की चतुर्गति सम्बन्धी अनित्य एवं
अशुद्ध पर्यायों को ग्रहण करता है वह विभाव-अनित्य-अशुद्ध-पर्यायाधिक
नय है ।

॥ इस प्रकार पर्यायाधिक नय के छह भेदों का निरूपण हुआ ॥

—♦—

नैगमस्येवा भूतभाविर्वर्तमानकालभेदात् ॥६४॥

संस्कृत नय चक्र में भी कहा है—

अनिष्पन्नं क्रियारूपं निष्पन्नं गदति स्फुटं ।

नैगमो वर्तमानः स्यादोदनं पच्यते यथा ॥२॥ [पृ० १३]

अर्थात्—अपूर्ण क्रियारूप को जो निष्पन्न-पूर्ण बतलाता है वह वर्तमान नैगमनय है । जैसे—भात पकाया जाता है ।

‘वसन्ति करोमि, ओदनं पचवानं पचामि, वाहं करोमीत्यादि-
निष्पन्नक्रियाविशेषानुद्दिश्य निष्पन्ना इति वदनं वर्तमाननैगमनयः ।’ [पृ० १३]

अर्थ—मैं वसति का बनाता हूँ, भात को, पावान को पकाता हूँ, इत्यादि-
अपूर्ण क्रिया विशेषों को लक्ष्य करके ‘पक गये’ ऐसा कहता वर्तमान नैगम
नय है ।

॥ इस प्रकार नैगम नय के तीनों भेदों का निरूपण हुआ ।

अर्थ—जीव समूह, सजीव समूह, जगियों का समूह, मोहों का समूह, रसों का समूह, पैरल जगते का समूह, मंत्रियों का समूह, मित्र, जामुन, आम व नागिन का समूह; इसी प्रकार जितान, तणिकुम्भ, कोटपान आदि प्रजात श्रेणी के निम्न दशादिक दृष्टान्तों के द्वारा प्रत्येक जाति के समूह को नियम से एकवचन द्वारा स्वीकार करके नयन करना विशेष संग्रह नय है।

॥ इस प्रकार संग्रह नय के दोनों भेदों का कथन हुआ ॥

व्यवहारोऽपि द्वेधा ॥७१/१॥

मूलार्थ—व्यवहारनय भी दो प्रकार का है (१) सामान्य (२) विशेष।

विशेषार्थ—संस्कृत नयचक्र में कहा भी है—

यः संग्रहप्रहोतार्ये शुद्धाशुद्धे विभेदकः।

शुद्धाशुद्धाभिवानेन व्यवहारो द्विधा मतः ॥१७॥ [पृ० ४२]

अर्थ—शुद्ध (सामान्य) संग्रह नय द्वारा ग्रहीत अर्थ की भेदक तथा अशुद्ध (विशेष) संग्रह नय द्वारा ग्रहीत अर्थ की भेदक व्यवहार नय भी शुद्ध, अशुद्ध (सामान्य, विशेष) के अभिधान में दो प्रकार का है।

सामान्य व्यवहार नय का स्वरूप—

सामान्यसंग्रहभेदको व्यवहारो यथा द्रव्याणि जीवाजीवाः

॥७१/२॥

मूलार्थ—सामान्यसंग्रह नय के विषयभूत पदार्थ में भेद करने वाला सामान्यसंग्रहभेदक व्यवहारनय है। जैसे—द्रव्य के दो भेद हैं—जीव और अजीव।

विशेषार्थ—संस्कृत नयचक्र में इस नय का स्वरूप इस प्रकार कहा है—

सामान्यसंग्रहस्यार्ये जीवाजीवादि भेदतः।

भिनन्ति व्यवहारोऽयं शुद्धसंग्रहभेदकः ॥१॥ [पृ० १५]

अनेन सामान्यसंग्रहनयेन स्वीकृतसत्ता सामान्यरूपार्थं भित्वा जीवपुद्गलादिकथनं, सेनाशब्देन स्वीकृतार्थं भित्वा हस्त्यश्वरथपदाति-

मनुष्य नयन नय है। जैसे—मनुष्यादि पर्यायों वाली शब्दी प्रायः प्रमाण नय तक रहती हैं।

विनिर्णय—यानत्र नयनक में मनुष्य मनुष्य नय का प्रमाण ही प्रमाण नय है।

भूमावाडयपनजायो ममगुसोति मगदिरीय नटतो ।

जो भगवत् नायकालं गो भूलो होउ रिगुनो ॥२१॥ [पृ० ३३]

अर्थात्—शब्दी विनिर्णय पर्यंत रहने वाली मनुष्य आदि पर्यायों की उक्त काल तक जो नय मनुष्य आदि कहता है वह स्वभावमनुष्य नय है।

ममका नयनक में इस प्रकार कहा है—

यो नरादिकपर्यायं स्वकीयभित्तिननेन ।

तावत्कालं तथा चण्डे स्थूलकृजुसूत्रकः ॥१६॥ [पृ० ४२]

मनुष्यादि पर्यायों वाली शब्दी-शब्दी विनिर्णय काल तक रहती हैं। उनसे काल तक मनुष्य आदि कहना स्थूलकृजुसूत्र नय है।

‘नरनारकादिघटपटादिव्यंजनपर्यायेषु जीवपुद्गलाभिवानरूप-
वस्तूनि परिणतानीति स्थूलकृजुसूत्रनयः [पृ० १६]। व्यंजनपर्याया-
पेक्षया प्रारम्भतः प्रारभ्य श्रवसान यावद्भवतीति निश्चयः कर्तव्य
इति तात्पर्यम् ।’ [पृ० १७]

अर्थ—नर-नारक आदि और घट-पट आदि व्यंजन पर्यायों में जीव और पुद्गल नामक पदार्थ परिणत हुए हैं। इस प्रकार का विषय स्थूलकृजुसूत्र नय का है। व्यंजनपर्याय की अपेक्षा प्रारम्भ से श्रवसान तक वर्तमान पर्याय निश्चय करना चाहिये।

॥ इस प्रकार कृजुसूत्र नय के दोनों भेदों का कथन हुआ ॥

शब्दसमभिरुद्धेवंभूता नयाः प्रत्येकमेकैका नयाः ॥७६॥

सूत्रार्थ—शब्द नय, समभिरुद्ध नय और एवंभूत नय इन तीनों नयों में से प्रत्येक नय एक एक प्रकार का है। शब्द नय एक प्रकार का है, समभिरुद्ध

आदि के दोष को दूर करता है । दूसरा मत है कि शब्द नय की दृष्टि में लिङ्ग, संख्या, साधन आदि का दोष नहीं है ।

समभिरूढनयो यथा गीः पशुः ॥७८॥

सूत्रार्थ—नाना अर्थों को 'सम' अर्थात् छोड़कर प्रधानता से एक अर्थ में रूढ होता है वह समभिरूढ है । जैसे—'गी' शब्द के वचन आदि अनेक अर्थ पाये जाते हैं तथापि वह 'पशु' अर्थ में रूढ है ।

विशेषार्थ—समभिरूढ नय का स्वरूप विस्तारपूर्वक सूत्र ४१ की टीका में कहा जा चुका है । आगे सूत्र २०१ में भी इसका लक्षण कहेंगे ।

एवंभूतनयो यथा इन्दतीति इन्द्रः ॥७९॥

सूत्रार्थ—जिस नय में वर्तमान क्रिया ही प्रधान होती है वह एवंभूतनय है । जैसे—जिस समय देवराज इन्दन क्रिया को करता है उस समय ही इस नय की दृष्टि में वह इन्द्र है ।

विशेषार्थ—सूत्र ४१ की टीका में एवंभूत नय का स्वरूप सविस्तार कहा जा चुका है । आगे सूत्र २०२ में भी इसका स्वरूप कहा जायगा ।

॥ द्रव्यार्थिक नय के १० भेद, पर्यायार्थिक नय के ६ भेद, नैगम नय के ३ भेद, संप्रहृणय के २ भेद, व्यवहार नय के २ भेद, ऋजुसूत्र नय के २ भेद, शब्द नय, समभिरूढनय और एवंभूतनय ये तीन, इस प्रकार नय के २८ भेदों का कथन हुआ ॥



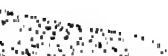
उपनयभेदा उच्यन्ते ॥८०॥

सूत्रार्थ—उपनय के भेदों को कहते हैं ।

विशेषार्थ—उपनय का लक्षण सूत्र ४३ में कहा जा चुका है । उसके तीन मूल भेद हैं—१. सदभूत, २. असदभूत, ३. उपचरित असदभूत व्यवहारनय ।

सदभूतव्यवहारो द्विधा ॥८१॥

सूत्रार्थ—सदभूत व्यवहारनय दो प्रकार का है ।



विभागैकलक्षणं कथयन् अशुद्धसद्भूतव्यवहारोपनयः ।'

[संस्कृत नयचक्र पृ० २१]

अर्थात्—संज्ञा, लक्षण, प्रयोजन के द्वारा भेद करके अशुद्ध द्रव्य में शुद्ध और गुणी के विभाग रूप मुख्य लक्षण को कहने वाला अशुद्ध-सद्भूतव्यवहार नय है ।

॥ इस प्रकार सद्भूत-व्यवहारनय के दोनों भेदों का कथन हुआ ॥

असद्भूतव्यवहारस्त्रेधा ॥८४॥

सूत्रार्थ—असद्भूतव्यवहारनय तीन प्रकार की है ।

विशेषार्थ—असद्भूत व्यवहारनय का लक्षण सूत्र ४४ की टीका में कहा जा चुका है और आगे भी सूत्र २०७ में कहेंगे । संस्कृत नयचक्र में भी कहा है—

‘यदन्यस्य प्रसिद्धस्य धर्मस्यान्यत्र कल्पना असद्भूतो भवेद्भावः ।’
[पृ० २२]

अर्थ—अन्य के प्रसिद्ध धर्म को किसी अन्य में कल्पित करना सो असद्भूत-व्यवहारनय है ।

असद्भूतव्यवहारनय के तीन भेद हैं—(१) स्वजात्यसद्भूतव्यवहारनय, (२) विजात्यसद्भूतव्यवहारनय, (३) स्वजातिविजात्यसद्भूतव्यवहारनय ।
स्वजात्यसद्भूतव्यवहारनय का लक्षण—

स्वजात्यसद्भूतव्यवहारो यथा परमाणुर्वहुप्रदेशीति कथन-
मित्यादि ॥८५॥

सूत्रार्थ—स्वजाति-असद्भूत-व्यवहारनय जैसे परमाणु को बहुप्रदेशी कहना, इत्यादि ।

विशेषार्थ—जो नय स्वजातीय द्रव्यादिक में स्वजातीय द्रव्यादि के सम्बन्ध में होने वाले धर्म का आरोपण करता है, वह स्वजात्यसद्भूतव्यवहारनय है ।
जैसे—परमाणु बहुप्रदेशी है । परमाणु, अन्य परमाणुओं के सम्बन्ध में बहु-

गुण-व्युत्पत्ति अधिकार

सहभुवो गुणाः, क्रमवर्तिनः पर्यायाः ॥६२॥

सूत्रार्थ—साथ में होने वाले गुण हैं और क्रम क्रम से होने वाली पर्यायें हैं । अर्थात् अन्वयी गुण हैं और व्यतिरेक परिणाम पर्यायें हैं ।

विशेषार्थ—संस्कृत नयचक्र में पृ० ५७ पर भी कहा है—

‘सहभुवो गुणाः । क्रमभाविनः पर्यायाः ।’

अर्थ—साथ में होने वाला गुण है और क्रमवर्ती पर्यायें हैं ।

ऐसा नहीं है कि द्रव्य पहिले हो और बाद में गुणों से सम्बन्ध हुआ हो । किन्तु द्रव्य और गुण अनादि काल से हैं, इनका कभी भी विच्छेद नहीं होता है अतः गुण का लक्षण ‘सहभुवः’ कहा है । अथवा जो निरन्तर द्रव्य में रहते हैं और अन्य गुण से रहित हैं वे गुण हैं । [मोक्षशास्त्र ५/४१]

विशेष गुण का लक्षण—

गुण्यते पृथक्क्रियते द्रव्यं द्रव्याद्यस्तेगुणाः ॥६३॥

सूत्रार्थ—जिनके द्वारा एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से पृथक् किया जाता है, वे (विशेष) गुण कहलाते हैं ।

विशेषार्थ—संस्कृत नयचक्र पृ० ५७ पर भी कहा है—

‘गुणव्युत्पत्तिर्गुण्यते पृथक् क्रियते द्रव्याद्द्रव्यं येनासौ विशेष-गुणः ।’

अर्थ—जिसके द्वारा एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से पृथक् किया जाता है वह विशेषगुण है, यह गुण का व्युत्पत्ति अर्थ है ।

सामान्यगुण और विशेषगुण के भेद से गुण दो प्रकार के हैं । सामान्य-गुण सब द्रव्यों में पाये जाते हैं । उन सामान्यगुणों के द्वारा तो एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से पृथक् नहीं किया जा सकता, विशेषगुणों के द्वारा ही एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से पृथक् किया जा सकता है । अतः गुण का यह व्युत्पत्ति अर्थ विशेष गुण में ही घटित होता है और ‘सहभुवो गुणाः’ अथवा ‘द्रव्याथवा

[The page contains approximately 20 lines of extremely faint, illegible handwritten text.]

जब आकाश धरेण के साथ जो अग्नि, वायु, अप, आकाश, जी-
त्य और कान्त्य में धरेणों को समुदाय की जाती है ।

चेतनस्य भावोऽचेतनत्वम् अचेतनमनुभवनम् ॥१०१॥

चेतनमनुभूतिः स्यात् सा क्रियास्वरूपेण च ।

क्रिया मनोपनःकामेष्वाविता वर्तते ध्रुवम् ॥६॥

सूत्रार्थ—चेतन के भाव को अर्थात् पदार्थों के अनुभव को चेतन
कहते हैं ।

भाषार्थ—चेतन नाम अनुभूति का है । वह अनुभूति क्रियास्वरूप प्रपञ्च
कर्तव्यस्वरूप ही होती है । मन, अचन, काम में प्रवृत्त (महित) वह क्रिया
निरूप होती रहती है ।

विशेषार्थ—जीवाजीवादि पदार्थों के अनुभवन को, जानने को चेतना
कहते हैं । वह अनुभवन ही अनुभूति है । अथवा द्रव्यस्वरूप चित्त को अनु-
भूति कहते हैं । श्री अमृतचन्द्रानाथ ने पञ्चास्तिकाय गाथा ३६ की टीका में
लिखा है—

चेतयन्ते अनुभवन्ति उपलभन्ते विदन्तीत्येकार्थाश्चेतनानुभूत्युप-
लब्धिवेदनानामेकार्थत्वात् ।

अर्थ—चेतना है, अनुभव करता है, उपलब्ध करता है और वेदता है
ये एकार्थ हैं क्योंकि चेतना, अनुभूति, उपलब्धि और वेदना का एकार्थ है ।

अचेतनस्य भावोऽचेतनत्वमचेतन्यमननुभवनम् ॥१०२॥

सूत्रार्थ—अचेतन के भाव को अर्थात् पदार्थों के अनुभव को अचेतनत्व
कहते हैं ।

विशेषार्थ—जीव के अतिरिक्त पुद्गल, घर्म, अघर्म, आकाश और काल
ये पाँचों द्रव्य अचेतन हैं, जड़ हैं, क्योंकि इनमें जानने की शक्ति अर्थात् अनु-
भवन का अभाव है ।

मूर्तस्य भावो मूर्तत्वं रूपादिमत्त्वम् ॥१०३॥

[The page contains faint, illegible handwritten notes.]

अर्थात्—परस्वस्व की अपेक्षा अभाव होने से नास्तिस्वभाव है ।

सूत्र में 'अभावात्' शब्द का अर्थ अभवनात् है ।

निज-निज-नानापर्यायेषु तदेवेदमिति द्रव्यस्योपलम्भान्नित्य-

स्वभावः ॥१०८॥

सूत्रार्थ—अपनी अपनी नाना पर्यायों में 'यह वही है' इस प्रकार द्रव्य की प्राप्ति 'नित्य स्वभाव' है ।

विशेषार्थ—ध्रुवत्व अंश की अपेक्षा से अथवा सामान्य अंग की अपेक्षा से द्रव्य नित्य स्वभावी है जो द्रव्याधिक नय का विषय है । अर्थात् द्रव्याधिक नय की अपेक्षा द्रव्य नित्य है ।

तस्याप्यनेकपर्यायपरिणामितत्वादन्नित्यस्वभावः ॥१०९॥

सूत्रार्थ—उस द्रव्य का अनेक पर्यायरूप परिणत होने से अनित्य स्वभाव है ।

विशेषार्थ—प्रतिसमय उत्पाद व्यय की दृष्टि से द्रव्य परिणमनशील होने से अथवा पर्यायाधिक नय की अपेक्षा द्रव्य अनित्यस्वभावी है । प्रमाण की अपेक्षा द्रव्य नित्यानित्यात्मक है ।

स्वभावानामेकाधारत्वादेकस्वभावः ॥११०॥

सूत्रार्थ—सम्पूर्ण स्वभावों का एक आधार होने से एक स्वभाव है ।

विशेषार्थ—अनेक गुणों, पर्यायों और स्वभावों का एक द्रव्य सामान्य आधार होने से द्रव्य एक स्वभावी है । संस्कृत नयचक्र पृ० ६५ पर कहा भी है—
'सामान्यरूपेणैकत्वमिति ।'

अर्थात्—सामान्य की अपेक्षा एक स्वभाव है ।

एकस्याप्यनेकस्वभावोपलम्भादनेक स्वभावः ॥१११॥

सूत्रार्थ—एक ही द्रव्य के अनेक स्वभावों की उपलब्धि होने से 'अनेक स्वभाव' है ।

विशेषार्थ—एक ही द्रव्य नाना गुणों, पर्यायों और स्वभावों का आधार

... 121 ...
... 121 ...
... 121 ...

... 121 ...
... 121 ...
... 121 ...

... 121 ...
... 121 ...
... 121 ...

... 121 ...
... 121 ...
... 121 ...

... 121 ...
... 121 ...
... 121 ...

... 121 ...
... 121 ...
... 121 ...

... 121 ...
... 121 ...
... 121 ...

... 121 ...
... 121 ...
... 121 ...

... 121 ...
... 121 ...
... 121 ...

1 18

अभाव हो जायगा । अर्थक्रियाकारित्व का अभाव हो जाने से द्रव्य का भी अभाव हो जायगा । श्री भगवत्पुनरेकान्ते ने प्रवचनसार गाथा ११० की टीका में कहा भी है—

‘न सानु द्रव्यात्मगम्भूतो गुण इति वा पर्याय इति वा कश्चिदपि स्यात् । यथा गुणगोप्यगम्भूतं तत्पीतत्वादिकमिति वा तत्कुण्डलादि-फलमिति वा ।’

अर्थ—निश्चय नय से द्रव्य से गुणगम्भूत कोई भी गुण वा पर्याय नहीं होती । जैसे—गुणगुं का पीलापन गुण तथा कुण्डलादि पर्यायें गुणगुं से गुणगम्भूत नहीं होतीं ।

अभेदपक्षेऽपि सर्वेषामेकत्वम्, सर्वेषामेकत्वेऽर्थक्रियाकारि-त्वाभावः, अर्थक्रियाकारित्वाभावे द्रव्यस्याप्यभावः ॥१३४॥

गुणार्थ—यद्यथा अभेद पक्ष में गुण-गुणी, पर्याय-पर्यायी सम्पूर्ण पदार्थ एक रूप हो जायेंगे । सम्पूर्ण पदार्थों के एक रूप हो जाने पर अर्थक्रियाकारित्व का अभाव हो जायगा और अर्थक्रियाकारित्व के अभाव में द्रव्य का भी अभाव हो जायगा ।

विशेषार्थ—प्रवचनसार गाथा २७ की टीका में श्री जयसेन आचार्य ने कहा है—

‘यदि पुनरेकान्तेन ज्ञानमात्मेति भण्यते तदा ज्ञानगुणमात्र एवात्मा प्राप्तः सुखादिधर्माणामवकाशो नास्ति । तथा सुखवीर्यादि-धर्मसमूहाभावादात्माऽभावः, आत्मन आधारभूतस्याभावादाधेय-भूतस्य ज्ञानगुणस्याप्यभावः, इत्येकान्ते सति द्वयोरप्यभावः ।’

अर्थ—यदि एकान्त से ज्ञान ही आत्मा है, ऐसा कहा जाय तब ज्ञानगुण मात्र ही आत्मा प्राप्त होगा, फिर गुण आदि स्वभावों का अवकाश नहीं रहेगा तथा सुख, वीर्य आदि स्वभावों के समुदाय का अभाव होने से आत्मा का अभाव हो जायगा । जब आधारभूत आत्मा का अभाव हो गया, तब

व्याजि, व्योम आदि का अभाव हो जायगा, क्योंकि बुद्धिजन्य अभाव का अभाव ही व्याजि की व्याज्यता होती है।

सर्वथाशब्दः सव्यप्रकारवाची, अथवा सर्वकालवाच्य
अथवा नियमवाची वा, अनेकान्तसापेक्षी वा ? यदि सर्वप्रका
वाची सर्वकालवाची अनेकान्तवाची वा, सर्वादिगणो पठनात्
सर्वशब्द, एवं विधश्चेत्तर्हि सिद्धं नः समीहितम् । अथवा
नियमवाची चेत्तर्हि सकलार्थानां तत्र प्रतीतिः कथं स्यात् ?
नित्यः अनित्यः एकः अनेकः भेदः अभेदः कथं प्रतीतिः
स्यात् नियमितपक्षत्वात् ? ॥१४०॥

... (faint, illegible text) ...

... (faint, illegible text) ...

... (faint, illegible text) ...

... (faint, illegible text) ...

विशेषार्थ—सूत्र ३५ में, प्रत्यक्ष और परोक्ष—प्रमाण के ऐसे दो भेद किये गये थे। यहाँ पर सविकल्प और निविकल्प की अपेक्षा प्रमाण के दो भेद किये गये हैं। जिस ज्ञान में प्रयत्नपूर्वक, विचारपूर्वक या इच्छापूर्वक पदार्थ को जानने के लिये उपयोग लगाना पड़े वह सविकल्प है। इससे विपरीत निविकल्प है।

सविकल्प ज्ञान का लक्षण तथा भेद—

सविकल्पं मानसं तच्चतुर्विवम् मतिश्रुतावचिमतःपर्ययरूपम् ॥१७६॥

सूत्रार्थ—मानस अर्थात् विचार या इच्छा सहित ज्ञान सविकल्प ज्ञान है। वह चार प्रकार का है—१. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान, ३. अवधिज्ञान, ४. मनःपर्ययज्ञान।

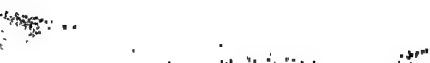
विशेषार्थ—मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का कथन सूत्र ३८ में और अवधि, मनःपर्यय ज्ञान का कथन सूत्र ३६ में हो चुका है। ये चारों ज्ञान विचार-सहित या इच्छा सहित होते हैं इसलिये इनको सविकल्प कहा है। यहाँ पर मन का अर्थ इच्छा या विचार है।

निविकल्पं मनोरहितं केवलज्ञानम् ॥१८०॥

सूत्रार्थ—मन रहित अथवा विचार या इच्छा रहित ज्ञान निविकल्प ज्ञान है। केवलज्ञान निविकल्प है।

विशेषार्थ—सूत्र ३७ में केवलज्ञान का कथन है। सूत्र १७६ व १८० में विकल्प का अर्थ मन किया है। यहाँ मन से अभिप्राय इच्छा या विचार का है। केवलज्ञान इच्छा या विचार रहित होता है, अतः केवलज्ञान को मनोरहित अर्थात् निविकल्प कहा गया है।

॥ इस प्रकार प्रमाण व्युत्पत्ति का कथन हुआ ॥



今日上午九时，在天安门广场举行开国大典，毛主席在天安门城楼上向全国人民发表讲话，宣告中华人民共和国中央人民政府成立。

毛主席说：中国人民从此站起来了！中国人民从此有了自己的政府！中国人民从此有了自己的国家！中国人民从此有了自己的出路！

毛主席说：中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！

毛主席说：中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！

毛主席说：中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！

毛主席说：中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！

毛主席说：中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！

毛主席说：中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！

毛主席说：中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！

毛主席说：中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！中国人民从此有了自己的出路！

सूत्रार्थ—परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परस्वभाव अर्थात् परचतुष्टय को ग्रहण करना जिसका प्रयोजन है वह परद्रव्यादिग्राहक द्रव्याधिक नय है ।

विशेषार्थ—इसका विशेष कथन सूत्र ५५ में है ।

परमभावग्रहणमर्थः प्रयोजनमस्येति परमभावग्राहकः

॥१६०॥

सूत्रार्थ—परमभावग्रहण करना जिसका प्रयोजन है वह परमभाव द्रव्याधिक नय है ।

विशेषार्थ—इस नय का विशेष कथन सूत्र ५६ में है ।

॥ इस प्रकार द्रव्याधिक नय की व्युत्पत्ति का कथन हुआ ॥

पर्यायाधिक नय का कथन

पर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति पर्यायाधिकः ॥१६१॥

सूत्रार्थ—पर्याय ही जिनका प्रयोजन है वह पर्यायाधिक नय है ।

विशेषार्थ—सूत्र ४१ के विशेषार्थ में इसका विशेष कथन है ।

अनादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येत्यानादिनित्य-पर्यायाधिकः ॥१६२॥

सूत्रार्थ—अनादि, नित्य पर्याय जिनका प्रयोजन है वह अनादि-नित्य पर्यायाधिक नय है ।

विशेषार्थ—मेघ आदि, पुद्गल द्रव्य की अनादि-नित्य पर्याय है । इस नय का विशेष कथन सूत्र ५८ में है ।

सादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति सादिनित्यपर्याया-धिकः ॥१६३॥

一、...

二、...

三、...

四、...

五、...

六、...

七、...

八、...

九、...

十、...

十一、...

十二、...

十三、...

十四、...

十五、...



वयणं तु समभिरूढं शारयकम्मस्स वंधगो जइया ।

तइया सो शेरइओ शारयकम्मेण संजुत्तो ॥५॥

शारयगइं संपत्तो जइया अणुइवइ शारयं दुक्खं ।

तइया सो शेरइओ एवंभूदो एओ भणदि ॥६॥

अर्थ—किसी मनुष्य को पापी जीवों का समागम करते हुए देखकर नैगम नय से कहा जाता है कि यह पुरुष नारकी है । [जब वह मनुष्य प्राणिवध करने का विचार कर सामग्री का संग्रह करता है तब वह संग्रह नय से नारकी है ।] जब कोई मनुष्य हाथ में धनुष और बाण लिये मृगों की खोज में भटकता फिरता है तब वह व्यवहार नय से नारकी कहलाता है । जब आरोह-स्थान पर बैठकर पापी, मृगों पर आघात करता है तब वह शत्रुमृत्यु नय से नारकी है । जब जन्तु प्राणों से विमुक्त कर दिया जाय तभी वह आघात करने वाला, हिंसा कर्म से संयुक्त मनुष्य, शब्द नय से नारकी है । जब मनुष्य नारक कर्म का बंधक होकर नारक कर्म से संयुक्त हो जाय तब वह समभिरूढ नय से नारकी है । जब वही मनुष्य नारक गति को पहुँच कर नरक के दुःख अनुभव करने लगता है तब वह एवंभूत नय से नारकी है ।

शुद्धाशुद्धनिश्चयो द्रव्यार्थिकस्य भेदो ॥२०३॥

सूत्रार्थ—शुद्धनिश्चय नय और अशुद्धनिश्चय नय ये दोनों द्रव्यार्थिक नय के भेद हैं ।

निश्चयनय का लक्षण —

अभेदानुपचारितया वस्तुनिश्चीयत इति निश्चयः ॥२०४॥

सूत्रार्थ—अभेद और अनुपचारिता में जो नय वस्तु का निश्चय करे वह निश्चय नय है ।

विशेषार्थ—गुण-गुणी पर्याय-पर्यायी का भेद अथवा द्रव्य में पर्याय या गुण-भेद निश्चय नय का विषय नहीं है, जैसा कि भगवद्गीता भाष्य ६ व ७ में कहा गया है । अन्य द्रव्य के सम्बन्ध में द्रव्य में व्यतिरिक्त जो भेद और भयं

... 199 ...

... 199 ...

... 199 ...

... 199 ...

... 199 ...

... 199 ...

... 199 ...

चूने में मिह का उपचार नहीं किया जाता है ।

टिप्पण अनुसार—यदि यहां कोई प्रश्न करे कि उपचार नय पृथक् क्यों कहा गया, यह तो व्यवहारनय का ही भेद है। इसलिये व्यवहारनय का ही कथन करना चाहिये था—तो इसका उत्तर दिया जाता है कि उपचार के कथन बिना, किसी भी एक कार्य की निम्ति नहीं होती । जहाँ पर मुख्य वस्तु का अभाव हो, वहाँ पर प्रयोजन या निमित्त के उपलब्ध होने पर उपचार की प्रवृत्ति की जाती है । वह उपचार भी सम्बन्ध के बिना नहीं होता । इस प्रकार उपचरित असद्भूत व्यवहार नय की प्रवृत्ति होती है । इसलिये उपचरित नय भिन्न रूप से कही गई है । सूत्र ४४ के विशेषार्थ में भी इस नय का कथन है । इसके भेदों का कथन सूत्र ८८ से ९१ तक है ।

सम्बन्ध का कथन—

सोऽपि सम्बन्धोऽविनाभावः, संश्लेषः सम्बन्धः, परिणाम-परिणामिसम्बन्धः, श्रद्धाश्रद्धेयसम्बन्धः, ज्ञानज्ञेयसम्बन्धः, चारित्रचर्यासम्बन्धश्चेत्यादि, सत्यार्थः असत्यार्थः सत्यासत्यार्थ-श्चेत्युपचरितासद्भूतव्यवहारनयस्यार्थः ॥२१३॥

सूयार्थ—वह सम्बन्ध भी सत्यार्थ अर्थात् स्वजाति पदार्थों में, असत्यार्थ अर्थात् विजाति पदार्थों में तथा सत्यासत्यार्थ अर्थात् स्वजाति-विजाति, उभय पदार्थों में निम्न प्रकार का होता है—१. अविनाभावसम्बन्ध, २. संश्लेष सम्बन्ध, ३. परिणामपरिणामिसम्बन्ध, ४. श्रद्धाश्रद्धेयसम्बन्ध, ५. ज्ञानज्ञेय-सम्बन्ध, ६. चारित्रचर्या सम्बन्ध इत्यादि ।

विशेषार्थ—इस नय का कथन सूत्र ८८ में भी है । इत्यादि से निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध, स्वस्वामी सम्बन्ध, वाच्य-वाचक सम्बन्ध, प्रमाण-प्रमेय सम्बन्ध, बंध्य-बंधक सम्बन्ध, वदध-घातक सम्बन्ध आदि को भी ग्रहण कर लेना चाहिये । ये सम्बन्ध यथार्थ हैं । यदि इनको यथार्थ न माना जाये तो संसार का, मोक्ष का, मोक्ष-मार्ग का, ज्ञान का और ज्ञेयों का, प्रमाण और प्रमेयों अर्थात् द्रव्यों का भी अभाव हो जायगा । सर्वज्ञ का भी अभाव हो

1937

1937

1937

1937

1937

1937

1937

1937

1937

1937

परिशिष्ट-२

अर्थक्रियाकारित्व

‘अनुवृत्तव्यावृत्तप्रत्ययगोचरत्वात्पूर्वोत्तराकारपरिद्वारा चाप्तिस्थिति-
लक्षणपरिणामेनार्थक्रियोपपत्तेश्च ।’

वस्तु अनुवृत्त (सामान्य धरणा गुण) और व्यावृत्त (पर्याय) रूप से
दिखाई देती है तथा पूर्व पर्याय का परिहार (नाश) और स्थिति (धोव्य)
रूप परिणामन से अर्थक्रिया की उत्पत्ति होती है ।

अर्थक्रियाविरोधादिति = कार्यकर्तृत्वायोगात्

सामान्य-विरोधात्मक वस्तु में उत्पाद, व्यय, धोव्य रूप अर्थक्रिया
होती है ।

‘त्रिलक्षणाभावतः अवस्तुनि परिच्छेदलक्षणार्थ क्रियाभावात् ।’

उत्पाद, व्यय और धोव्य रूप लक्षणयय का अभाव होने के कारण
अवस्तु स्वरूप जो ज्ञान उसमें परिच्छिदति रूप अर्थक्रिया का अभाव है । जैसे-
जैसे ज्ञेयों में उत्पाद, व्यय, धोव्य रूप परिणामन होता है उस ही के अनुसार ज्ञान
में भी जानने की अपेक्षा उत्पाद, व्यय, धोव्य होता रहता है । जो पर्याय प्रति-
क्षण उत्पन्न होती है उस पर्याय को ज्ञान सद्भाव रूप से जानता है । जो
उत्पन्न होकर विनष्ट हो चुकी हैं या अनुत्पन्न हैं उनको अभाव रूप से जानता
है, अन्यथा ज्ञेयों के अनुकूल ज्ञान में परिणामन नहीं बन सकता ।

स्वामिकारिकेयानुपेक्षा में भी कहा है—

जं वत्थु अण्णेतं तं चिय कज्जं करेदि णियमेण ।

बहुधम्मजुदं अत्थं कज्जकरं दीसदे लोए ॥ २२५ ॥

एयंतं पुण्ण दब्बं कज्जं ण करेदि लेसमेत्तं पि ।

जे पुण्ण ण करदि कज्जं तं वुच्चदि केरिसं दब्बं ॥ २२६ ॥

१. श्लोकवातिक भाग ६ पृ० ३५६ । २. प्रमेयरत्नमाला पृ० २६४ ।

३. धवल पु० ६ पृ० १४२ । ४. धवल पु० १ पृ० १६८ ।

第 二 章

一、緒言

本報告之目的，在於調查我國各地之農業生產，並將其結果，彙編成冊，以供一般農家之參考。本報告之範圍，限於我國各地之農業生產，而不包括其他之事項。本報告之資料，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之編纂，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之編纂，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。

二、調查之經過

本報告之調查，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。

三、調查之結果

本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。

本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。

本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。本報告之調查結果，係根據各地農家之調查結果，而彙編成冊。

भेदात्मक मानने पर उसका अनाधारण आधार में निश्चय नहीं किया जा सकता, अतः सर्वत्र दोष आता है ॥६॥ सर्वत्र होने में उपास्य ठीक जान नहीं हो पाता, अतः अनतिवृत्ति नामक दोष आता है ॥७॥ ठीक प्रतिपत्ति के न होने में अमान नाम का दोष भी आता है ॥८॥

निरपेक्ष, एतन्त्र दृष्टि में ये आठों दोष सम्भव हैं। सापेक्ष, अनेकान्त दृष्टि में इन आठ दोषों में से एक दोष भी सम्भव नहीं है।

जो गुण और गुणी (द्रव्य) में सर्वथा भेद मानते हैं, उनके मत में उपर्युक्त आठों दोष सम्भव हैं, जो गुण और गुणी का सर्वथा अभेद मानते हैं, उनके मत में उपर्युक्त आठों दोष सम्भव हैं तथा जो भेद और अभेद को परस्पर सापेक्ष नहीं मानते हैं उनके मत में भी उपर्युक्त आठों दोष सम्भव हैं। किन्तु, भेद और अभेद को सापेक्ष मानने वाले स्याद्वादियों के मत में उक्त आठ दोष सम्भव नहीं हैं क्योंकि, वस्तुस्वरूप अनेकान्तरात्मक है।



मादिता स्वभावा	७, ८, १८, २७, ७३, ७४, १४८, १६८
नित्य स्वभावा	७, ८, १८, २७, ७३, ७४, १४०, १४८, १६८
निविरतन नय	२८, १८१
निविरतन प्रमाण	२८, १७८, १८०
निरनय नय	१०, २१, २४, ८३, १८०, १८८, १८९, २००
निषेध	२८, १८२
नीगम नय	११, १३, १४, ३०, ८४, ११८, ११९, १२०, १२१, १८७
नोकर्म	१७१, १७२, १७३
परदशंक	८, २१, ७४
परद्रव्यादिग्राहक द्रव्याधिकनय	१२, २९, ११०, १८४
परमभावग्राहक द्रव्याधिकनय	१२, ३०, १११, १८६
परम स्वभाव	७, ८, २०, ७३, ७४
परमाणु	६, ७, १८, ६४, ६५, ६६, ६७, ८१, १७४, १७६
परज्ञता	८, २१, ७४
पर्याय	१, ४, १७, १८, ३६, ५१, ६६, ७०, ७२, १४०, १४१, १४२, १४८, १८६
पर्यायाधिक नय	११, १३, ३०, ७०, ८४, ८५, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, १८६
परिणाम-परिणामि सम्बन्ध	३४, १८६
परोक्ष	८२, ८३
पारिणामिक भाव	२०, १४४
पुद्गल	२, ३, ८, ४१, ६६, ७१, ७६, १७७
प्रत्यक्ष	८२
प्रदेशत्व	२, १८, ४५, १४५
प्रमाण	१०, १५, २८, ८१, ८२, १६८, १७८
प्रमेयत्व	२, १७, १८, ४४, १४३
भव्य स्वभाव	७, ८, २०, २३, २६, ७३, ७५, १५२, १६१, १६३, १७१

附 錄

附錄一
附錄二
附錄三
附錄四

附錄一
附錄二
附錄三
附錄四

附錄五

附錄六

附錄七

附錄八

附錄九

附錄十

附錄十一

附錄十二

附錄十三

附錄十四

附錄十五

附錄十六

附錄十七

附錄十八

附錄十九

附錄二十

附錄二十一

附錄二十二

附錄二十三

附錄二十四

附錄二十五

附錄二十五

附錄二十六

附錄二十六

附錄二十七

附錄二十七

附錄二十八

附錄二十八

附錄二十九

附錄二十九

附錄三十

附錄三十

附錄三十一

附錄三十一

附錄三十二

附錄三十二

附錄三十三

附錄三十三

附錄三十四

附錄三十四

附錄三十五

व्यवहार नय

१०, ११, १५, ३१, ३४, ३७, ६३, ६६,
१०३, १२४, १२५, १२६, १३१, १८८, १९१,
१९८, १९९, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५,
२०६, २०७, २०८

व्यंजन पर्याय

४, ५, ६, ५२, ५६, ६६, ७१, १२८

शब्द नय

११, १५, ३१, ६६, १२८, १८८

शुद्धद्रव्याधिक नय

११, २७, २६, १०५, १०६, १८४

शुद्धनिश्चय नय

३४, १६६, २००, २०१, २०२

शुद्धपर्यायाधिक नय

१३, ३०, ११६, ११७, १७८, १८७

शुद्धसदभूतव्यवहार नय

१६, १३१

शुद्ध स्वभाव

७, ६, २१, २५, २७, ७३, ७५, १५५, १
१७८

श्रुताश्रद्धेय सम्बन्ध

३४, १६६

श्रुतज्ञान

८३, ६१, ६२, १८०

सत्

२, १७, २२, ४२, १४३, १५८

सदभूतव्यवहार नय

११, १६, २६, ३१, ३२, ३४, १०३, १३१

१६१, १६२, २०२, २०३, २०४

११, १५, ३१, १००, १०१, १२८, १८६

१६६

२४, १६४, १६५

७५

२८, १८१

२८, १७६, १८०

२३, १६०

२, ४

७, ७३, १४१

६, ६, ११, १३, १४, ६१, ६२

३, ४८, ५०, ६२

२२, १५८

सामान्य नय

सम्बन्ध

सर्वथा

सर्वज्ञ

सर्विकल्प नय

सर्विकल्प प्रमाण

सामान्य

सामान्य गुण

सामान्य स्वभाव

निष्ठ

मुक्त

संकरदोष

甲子年 壬子月 壬子日

1941, 1942, 1943, 1944, 1945, 1946, 1947, 1948, 1949, 1950, 1951, 1952, 1953, 1954, 1955, 1956, 1957, 1958, 1959, 1960, 1961, 1962, 1963, 1964, 1965, 1966, 1967, 1968, 1969, 1970, 1971, 1972, 1973, 1974, 1975, 1976, 1977, 1978, 1979, 1980, 1981, 1982, 1983, 1984, 1985, 1986, 1987, 1988, 1989, 1990, 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 26

440

2000

Figure 1

2019年12月12日

[illegible]

... ..

$$-\frac{1}{2} - \frac{1}{4} - \frac{1}{4}$$

453

花子

1945 1946 1947

Figure 1

43

[illegible]

[Faint handwritten notes at the bottom of the page]

三、四、五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。

我々が、この問題を解決するに必要とするものは、

西曆一千九百零九年九月廿九日

422

[illegible]

李 德 李 德 李 德 李 德

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

三、四、五、六

한글: 1994년 12월 15일

Wang et al.

24

400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000

第 4 章 第 2 节 第 4 题

2004

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध

३ ४ नास्ति ।

५ ५ सन्ध्यातभाग

६ ३ ध्वंसीपर्याय

६ १५ वभाव

६ १८ ...रसकैका...

८ ३ पृथक्

८ १८ पर्यायैः

८ २६ गंधवर्ण

९ ९ स्वभावः

१० १२ स्थितः

१४ ७ ज्ञानोत्पात्त

१५ ९ स्तदायुः प्रमाण

१५ १२ मेकैके नयाः

१५ १७ एवं भूत

१८ २० स्पर्शवत्त्वं

१९ १९ नेक स्वभावः

२० ३ चतुर्भिः प्राणैः

२० ४ अजीववितति

२० ६ च्छिति मात्र

२५ ५ प्रसङ्गः

२८ ४ तद्वेधा

२८ ६ वस्तुनंगृही

२८ २२ गाहा

शुद्ध

नास्ति । यर्माधर्माकायकाल-
द्रव्येषु चेतनत्वं मूर्तत्वं च नास्ति ।

सन्ध्यातभाग

ध्वंसी पर्याय

विभाव

...रसकैका...

पृथक्

पर्यायैः

गंधवर्ण

स्वभावाः

स्थिताः

ज्ञानोत्पत्ति

स्तदायुःप्रमाण

मेकैका नयाः

एवंभूत

स्पर्शवत्त्वं

नेकस्वभावः

चतुर्भिः प्राणैः

अजीववितति

च्छितिमात्र

प्रसङ्गः स्यात्

तद्वेधा

वस्तु मंगृही

गाया

三 卷 目

第一回 金瓶梅	第一回 金瓶梅
第二回 金瓶梅	第二回 金瓶梅
第三回 金瓶梅	第三回 金瓶梅
第四回 金瓶梅	第四回 金瓶梅
第五回 金瓶梅	第五回 金瓶梅
第六回 金瓶梅	第六回 金瓶梅
第七回 金瓶梅	第七回 金瓶梅
第八回 金瓶梅	第八回 金瓶梅
第九回 金瓶梅	第九回 金瓶梅
第十回 金瓶梅	第十回 金瓶梅
第十一回 金瓶梅	第十一回 金瓶梅
第十二回 金瓶梅	第十二回 金瓶梅
第十三回 金瓶梅	第十三回 金瓶梅
第十四回 金瓶梅	第十四回 金瓶梅
第十五回 金瓶梅	第十五回 金瓶梅
第十六回 金瓶梅	第十六回 金瓶梅
第十七回 金瓶梅	第十七回 金瓶梅
第十八回 金瓶梅	第十八回 金瓶梅
第十九回 金瓶梅	第十九回 金瓶梅
第二十回 金瓶梅	第二十回 金瓶梅
第二十一回 金瓶梅	第二十一回 金瓶梅
第二十二回 金瓶梅	第二十二回 金瓶梅
第二十三回 金瓶梅	第二十三回 金瓶梅
第二十四回 金瓶梅	第二十四回 金瓶梅
第二十五回 金瓶梅	第二十五回 金瓶梅
第二十六回 金瓶梅	第二十六回 金瓶梅
第二十七回 金瓶梅	第二十七回 金瓶梅
第二十八回 金瓶梅	第二十八回 金瓶梅
第二十九回 金瓶梅	第二十九回 金瓶梅
第三十回 金瓶梅	第三十回 金瓶梅
第三十一回 金瓶梅	第三十一回 金瓶梅
第三十二回 金瓶梅	第三十二回 金瓶梅
第三十三回 金瓶梅	第三十三回 金瓶梅
第三十四回 金瓶梅	第三十四回 金瓶梅
第三十五回 金瓶梅	第三十五回 金瓶梅
第三十六回 金瓶梅	第三十六回 金瓶梅
第三十七回 金瓶梅	第三十七回 金瓶梅
第三十八回 金瓶梅	第三十八回 金瓶梅
第三十九回 金瓶梅	第三十九回 金瓶梅
第四十回 金瓶梅	第四十回 金瓶梅
第四十一回 金瓶梅	第四十一回 金瓶梅
第四十二回 金瓶梅	第四十二回 金瓶梅
第四十三回 金瓶梅	第四十三回 金瓶梅
第四十四回 金瓶梅	第四十四回 金瓶梅
第四十五回 金瓶梅	第四十五回 金瓶梅
第四十六回 金瓶梅	第四十六回 金瓶梅
第四十七回 金瓶梅	第四十七回 金瓶梅
第四十八回 金瓶梅	第四十八回 金瓶梅
第四十九回 金瓶梅	第四十九回 金瓶梅
第五十回 金瓶梅	第五十回 金瓶梅

७२ २३ ५/ ८	५/ ३८
७६ २५ तरत्तस्या	तरत्तस्मा
८० २० कायाधर्मा	काया धर्मा
८० २६ परमाणु	परमाणु
१०८ २३ गुणगुणियईण	गुणगुणियाईण
१०६ ३ द्रव्याधिको	द्रव्याधिको
१०६ ८ रूवेण	रूवेण
१११ २५ गिहणइ	गिह्णइ
११२ २४ गिहणइ	गिह्णइ
११५ १० गिह्णए	गिह्णए
११६ ८ अमुद्धओ	अमुद्धओ
१२२ हैडिग [सूत्र ६८	[सूत्र ६८
१२५ १० जलाकार	जालकार
१२८ १४ जीवपुद्गला	जीवपुद्गला
१२६ २३ भण्णओ पुस्सा	भण्णओ ऐओ पुस्सा
१४४ हैडिग [सूत्र ६६	[सूत्र ६६
	गाया ५
१५७ १४ दा	दो
१७२ १८ शरीर है ।	शरीर जीव है ।
१७६ २ वयोऽपि	नमोऽपि
१८४ १६ वध	बंध
१८४ २१ पचास्तिकाम	पंचास्तिकाय
१८६ १६ अनादि, नित्य	अनादि-नित्य
१६१ २० लाप	लोप
१६२ ६ धमस्या	धर्मस्या

नोट (१)—पृ० १७२ सूत्र १६० की टीका में यह जोड़ना चाहिये—

‘अनन्तानन्त विमलसोपचय सहित कर्मपुद्गलस्कंध कयंचित् जीव
 क्योंकि वह जीव से पृथक् नहीं पाया जाता है [ध्वज पु० १२ पृ० २६६
 ‘आद्येय में आधार का उपचार करने से परमाणु की जीवप्रदेश संज्ञा

...
...
...
...
...

...
...
...
...
...



